@MahiSandesh MAHI SANDESH https://www.facebook.com/hindimagazinemahi/

साहित्यिक और सामाजिक मूल्यों की मासिक पत्रिका

R.N.I. No.
RAJHIN/2018/75539

ISSN : 2581-9208

माही संदेश

बारूद के बदले हाथों में
आ जाए किताब तो
अच्छा हो।
ऐ काश हमारी आँखों का
इक्कीसवाँ ख्वाब तो
अच्छा हो।

-गुलाम मोहम्मद क़ासिर

वर्ष : 2 अंक : 6 सितम्बर : 2019 पृष्ठ संख्या : 32 मूल्य : 35/-

साहित्य हमेशा समाज का दर्पण होता है
अच्छा पढ़ें, अच्छा सुनें, अच्छा कहें

पुस्तकें मेरी सबसे अच्छी मित्र हैं

जगरूप सिंह यादव

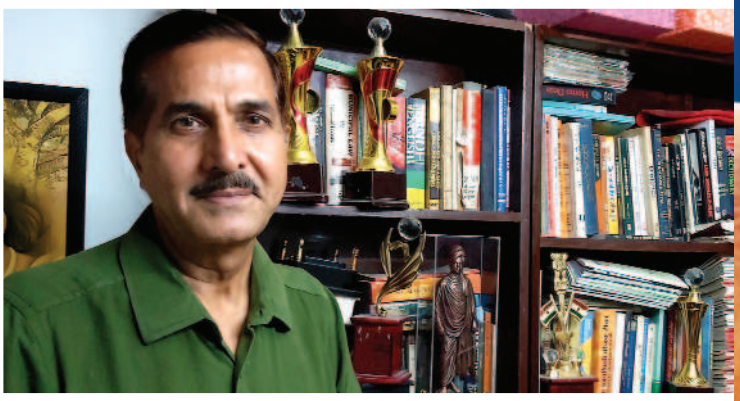

रोहित कृष्ण नंदन

जयपुर कलेक्टर का पद बहुत बड़ा है लेकिन पद से भी बड़ा है जगरूप सिंह यादव जी का व्यक्तित्व। माही संदेश के सहयोगी साथी अरविंद शर्मा के साथ जगरूप सिंह जी से विशेष बातचीत हुई। जब बचपन की बात आरंभ हुई तो पता चला कि यूं ही नहीं कोई सफल बन जाता है, इसके पीछे वर्षों की मेहनत लगी होती है। बचपन के दिनों में जगरूप सिंह यादव नदी पारकर तैरकर स्कूल जाते थे। अपने माता-पिता की पांचवीं संतान हैं। पिताजी खेती करते और मां कुशल गृहिणी। चौथी कक्षा तक तो पढ़ाई में साधारण ही रुचि थी लेकिन इसके बाद जो लगन लगी वो पढ़ने की ललक आज भी बदस्तूर जारी है। दसवीं कक्षा में वरीयता सूची में नाम आया और सफलता का मार्ग प्रशस्त हुआ।

जब बढ़े कदम

पढ़ाई के दिनों को याद करते हुए जगरूप सिंह यादव बताते हैं कि अक्सर मन में लगा रहता था कि डिप्टी कलेक्टर बनूंगा, मुझे लगता था कि उप जिला कलेक्टर, कलेक्टर से बड़ा होता है, अखबारों व पत्रिकाओं में जब अधिकारियों का नाम आता था तो लगता था कि प्रशासनिक अधिकारी ही बनना है। ग्रेजुएशन के दौरान जब जयपुर आया तो कुछ जरूरी सामान साथ लेकर कुर्ता-पायजामा पहनकर आया था। जगरूप बताते हैं कि वो रात आज भी याद है जो सिंधीकैंप बस स्टैंड पर सोकर बिताई थी, महज 100 रुपए लेकर गांव से जयपुर आया था। सबसे पहले वाणिज्य सेवा में इंस्पेक्टर के रूप में चयन हुआ इसके बाद दूसरे प्रयास में आरएएस की लिखित परीक्षा में 1400 अंकों में से जगरूप यादव जी ने 1014 अंक हासिल किए। टॉप रैंक का यह कीर्तिमान आज भी कायम है। आरएएस में चयन के बाद पहली पोस्टिंग जयपुर में ही जमवारामगढ़ में बीडीओ के रूप में हुई, कई जगह रहने के बाद यह विशेष बात है कि जिस शहर में बीडीओ के रूप में काम किया आज उसी शहर में कलेक्टर के पद पर कार्यरत हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य की बात करते हुए जगरूप कहते हैं कि वर्तमान समय की जो शिक्षा नीति है उसमें परिवर्तन करने की बहुत जरूरत है, रोजगार परक शिक्षा को बढ़ावा देने की जरूरत है, आने वाला युग मशीनी युग है अगर हम अभी नहीं संभले तो आगे संभलना मुश्किल होगा। इंसानों की जगह रोबोट ले रहे हैं जो कि मानवता के लिहाज से घातक है। **...शेष पृष्ठ 5 पर**

जगरूप सिंह यादव कहते हैं कि जो मानवता को विचार और तकनीक देता है वही शख्स सही मायने में ज़िंदा रहता है। वर्तमान में भले ही समाज में कई समस्याएं हैं लेकिन हल भी विद्यमान हैं।

माही संदेश (राष्ट्रीय पत्रिका)

संस्थापक	डॉ. मदनलाल शर्मा*
संरक्षक-सलाहकार	सुधीर माथुर*
प्रधान संपादक	रोहित कृष्ण नंदन (98874-09303)
प्रबंध निदेशक	डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा*
सह-संपादक	नित्या शुक्ला* ममता पंडित* डॉ. महेश चंद* वंदना शर्मा* मधु गुप्ता*
आईटी सलाहकार	सोनू श्रीवास्तव*
ब्यूरो चीफ (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र)	रमन सैनी* 9717039404
संवाददाता	दीपक शर्मा आजाद* दीपक कृष्ण नंदन* ईशा चौधरी*
अकादमिक सलाहकार	डॉ. सुधीर सोनी*
बिजनेस हैड	अनुराग सोनी* 9828198745
कानूनी सलाहकार	शिव कुमार अवार*
सर्कुलेशन मैनेजर	आर.के. शर्मा* (मुम्बई)

परामर्श समिति

माला रोहित कृष्ण नंदन*
डॉ. गीता कौशिक* बालकृष्ण शर्मा*
डॉ. रश्मि शर्मा* डॉ. मीना शर्मा*
डॉ. नीति मिश्रा* प्रकाश चन्द शर्मा*

संरक्षक मंडल	रामेश्वरी देवी*
डिजाइनिंग	सागर कम्प्यूटर 79765-17072
मुद्रण	कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स 9024765603

पृष्ठ संख्या : 32 आवरण सहित
प्रकाशन तिथि : प्रत्येक माह की 01 तारीख

: कार्यालय :

50-51 ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

ई-मेल :
mahisandesh31@gmail.com

मोबाइल : 9887409303

पत्रिका में प्रकाशित आलेख-रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। चित्र व लेख के कुछ आंकड़ों को इंटरनेट वेबसाइटों से संकलित किया गया है।

नाम के आगे अंकित (*) चिह्न अवैतनिक है।

पुस्तकें उपहार में देने की परंपरा निभाएं हम

रोहित कृष्ण नंदन
प्रधान संपादक
माही संदेश
mahisandesheditor@yahoo.com

'चलें किताबों की ओर' यह सिर्फ एक कथन नहीं है। यह दिल की आवाज़ है, आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में तनाव और तकनीक हम पर हावी होती जा रही हैं। हम काग़ज़ किताब और कलम को छोड़कर मोबाइल, कम्प्यूटर, लैपटॉप, टैबलेट आदि को प्राथमिकता देने लगे हैं। इन्हें प्राथमिकता देना गलत नहीं है लेकिन जो चीज हमें बनाती हैं उनसे दूरी बना लेना बहुत गलत है। एक किताब सौ शिक्षकों और मित्रों का काम करती है बशर्ते अगर उसकी अच्छाइयों को दिल से दिल में उतारा जाए। वो परंपराएं जो अब पीछे छूटती नज़र आती हैं उन्हें फिर से कदम से कदम मिलाकर साथ लाया जाए। चाहे किसी का जन्मदिवस हो या कोई कार्यक्रम हम पुस्तक भेंट करने की परंपरा विकसित करें, उपलब्ध अवसर के आधार पर ऐसी पुस्तकों का चुनाव करें जो संबंधित व्यक्ति विशेष के जीवन में उपयोगी साबित हो। कल पर कोई भी काम न टालें क्योंकि कल कभी नहीं आता। आइए आज से पुस्तकों का महत्व न केवल खुद हम समझेंगे बल्कि साथी मित्रों को भी समझाएंगे। अभी कुछ दिन पहले एक खबर पढ़ने को मिली दिल्ली हाईकोर्ट ने उत्तरी दिल्ली नगर निगम को पचास साल पुराने दरियागंज के संडे बुक मार्केट को बंद करने का आदेश दिया और इस क्षेत्र को नो-हॉकिंग जोन घोषित कर दिया। गौरतलब है कि किताब बाजार के नाम से मशहूर इस जगह किताबें बेहद सस्ते दामों में पाठकों को उपलब्ध होती थीं और किताबों के शौकीन लोगों के लिए यह सबसे खास जगह थी। अगर इस तरह हाथों से किताबों को छीना जाएगा तो क्या आने वाला कल सुनहरा हो पाएगा, सरकारों को सोचना होगा ये किताबें ही हैं जिनके दम से सरकारें चलती हैं। सरकार में पदस्थ लोग हों, नेता हों या फिर आम आदमी, किताबें हर कोई पढ़ता है तो फिर इनसे दूरी और क्यों? आइए सब मिलकर फिर 'चलें किताबों की ओर'

शेष फिर...

एक नजर यहां भी

आवरण कथा
चलें किताबों की ओर... — ममता पंडित 6
प्रिय पुस्तकें
किताबें जो जिंदगी बदल दे — उदय सिंह 7
'कुछ किताबें' हमारी जिंदगी का आईना होती हैं — डॉ. सुषमा गुप्ता 8
नमन
महिला सशक्तिकरण की खुली किताब है.... — नित्या शुक्ला 9
अपनी भाषा
हिन्दी को संवाद की जरूरत है — अभिषेक यादव 11
मन का कोना
मेरा बचपन मेरे कंधों पर: बाल मजदूरी की बेड़ियां — भारती 12
Many Lives, Many Masters — माला रोहित कृष्ण नंदन 12
प्रिय पोथी
मेरी प्रिय पुस्तक 'रामचरितमानस' — सीता देवी राठी 13
गुरु हैं पुस्तकें' — मुक्ता वार्ष्णेय 13
हमारी बात
लाइब्रेरी का वो दरवाजा — हेमा शर्मा 14
अच्छी पहल
जिन्हें जुर्म-ए-इश्क़ पे नाज़ था — पंकज पाराशर 15
शख्सियत
मैं भेड़ नहीं बन सकता मेरा रास्ता मेरा होगा-नीरज गोस्वामी 16
जीवन संदेश
जीवन में अटल जी की पुस्तक से प्रेरणा — डॉ. हरिसिंह गोदारा 20
मन की बात
तारों की तरह हैं रचना — वर्तिका अग्रवाल 22
कौन रोएगा आपकी मृत्यु पर? — शैली श्रीवास्तव 22
पुस्तक समीक्षा
खूबसूरत गुलदस्ता 'कैफियत' — जालाराम चौधरी 23
अपनी बात
सर्वश्रेष्ठ मित्र हैं पुस्तकें — देवी सिंह नरूका 24
कॉपीराइट (प्रतिलिप्याधिकार) — शिवकुमार 'अवार' फौजदार 24
पुस्तक संदेश
गालिब से मिलाती है 'दीवान ए गालिब' — अरविंद शर्मा 25
सिनेमा संदेश
कलम के 'सिकंदर' पंडित सुदर्शन — शिशिर कृष्ण शर्मा 26
सलाम
तस्वीर खींचने का शौक अब जुनून है...... — रोहित कृष्ण नंदन 30

आवरण चित्र - रोहित सैनी*

युवा फोटोग्राफर हैं और पिछले दो वर्ष से फोटोग्राफी में अपनी विशेष जगह बनाई है। वर्तमान में मॉडल टाउन, बहादुरगढ़ (हरियाणा) में निवास कर रहे हैं। स्ट्रीट फोटोग्राफी इनकी विशेषता है।

माही संदेश

हिन्दी पत्रिका के सदस्य बनें

: कार्यालय :

माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर (राजस्थान)।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : ₹ 400
पंचवर्षीय : ₹ 2000
आजीवन : ₹ 11000

चेक **'Mahi sandesh'** (माही संदेश) के नाम से देय एवं रेखांकित होना चाहिए। **रजिस्टर्ड डाक से प्रति मंगवाने पर (प्रति वर्ष 250/- रुपए) अतिरिक्त देय डाक खर्च शुल्क भेजें।**

भवदीय,
'रोहित कृष्ण नंदन'
संपादक : 'माही सन्देश'
खाता संख्या : 37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखाः कनक विहार, हीरापुरा, अजमेर रोड, जयपुर
पेटीएम-9887409303

लिखते हैं तो स्वागत है...

अगर आप कविता, लघु कथा या सामाजिक विषयों पर लिखते हैं तो आप अपनी लेखन सामग्री हमें अपनी तस्वीर व पते के साथ ईमेल या डाक के माध्यम से भेज सकते हैं। चुनी हुई रचनाओं को माही संदेश के आगामी अंकों में प्रकाशित किया जाएगा।

डाक का पता - संपादक, माही संदेश
50-51 ए, कनक विहार, एसबीआई बैंक के पास, हीरापुरा, अजमेर रोड़, जयपुर पिन-302021 राजस्थान
ईमेल-
mahisandesh31@gmail.com
Mob&whatsapp- 9887409303

क्रमश: पृष्ठ 2 से

साहित्य से है गहरा लगाव

जगरूप सिंह यादव का साहित्य से गहरा नाता रहा है। खास बात यह है कि इन्होंने अपने घर पर अपना व्यक्तिगत पुस्तकालय बना रखा है, जिसमें हजारों किताबें हैं और 500 से अधिक किताबें इन्होंने पढ़ी हैं और पढ़ना निरंतर जारी है। चाहे हिंदी कविता हो या अंग्रेजी की। यूं तो कई शायर कई कवि इनके पसंदीदा रहे हैं लेकिन मिर्जा गालिब व हरिवंश राय बच्चन की रचनाएं इन्हें मुंह जुबानी याद हैं। पुस्तकों के बारे में जगरूप कहते हैं कि किताबें हमेशा मेरी सबसे अच्छी दोस्त रहीं हैं। हरिवंश राय बच्चन की इन्हें 400 कविताएं कठंस्थ हैं और खास बात यह है कि अधिकांश कविताएं यह तरन्नुम में गाते हैं।

इन दिनों कबीर पर लिखी किरण नागर की किताब अभी जगरूप पढ़ रहे हैं। जगरूप कहते हैं कि कबीर मुझमें जिंदा हैं जो कबीर को पढ़ते हैं उनमें जिंदा हैं, मरते वही लोग हैं जिनका नाम देश काल की सीमाएं लांघकर आगे नहीं जाता, जो मानवता को विचार देता है तकनीक देता है, मानवता के सुख दु:ख

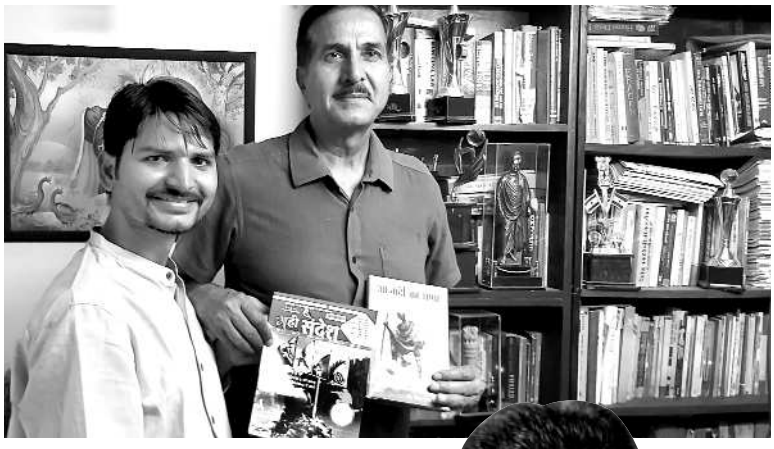

व संघर्षों में सहायक है वही नाम अमर हैं। यूं तो सभी किताबें अच्छी और उपयोगी होती हैं, इतिहास की दृष्टि से रामचन्द्र गुहा द्वारा लिखित इंडिया आफ्टर गांधी सभी को जरूर पढ़नी चाहिए। इसके अलावा ट्वंटी फर्स्ट लैसन फॉर ट्वंटी फर्स्ट सेंचुरी, सुपर इंटलिजेंस नामक किताब भी बहुत अच्छी है। यह किताब आने वाले समय के बारे में इंगित करती है। जगरूप सिंह जी कहते हैं कि वर्तमान में ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा पर ध्यान देने की विशेष जरूरत है।

प्रेरणादायी व्यक्तित्व

दाम्पत्य जीवन की बात करते हुए

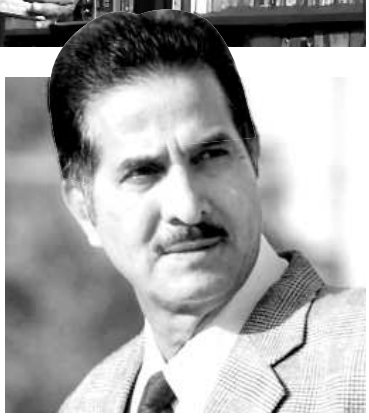

जगरूप कहते हैं कि हममें कभी झगड़ा नहीं हुआ। आपसी सामंजस्य महत्वपूर्ण है। भविष्य की योजनाओं के बारे में जगरूप कहते हैं कि मानवीय सरोकार, सामाजिक समरसता के कार्य जीवन में लगातार करते रहने की कोशिश है।

तस्वीर बोल उठी-18

तस्वीर : अरुण मजूमदार

इस तस्वीर को देखकर आपके मन में जो भाव उमड़ रहे हैं बस उन भावों को काव्य भाषा की चार पंक्तियों में लिख डालिए। सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को माही संदेश के अगले अंक (अंतिम तिथि 20 जून) में प्रकाशित किया जाएगा-

तस्वीर बोल उठी-17

रचना भेजने का पता

संपादक माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर- 302021(राजस्थान)।
email-mahisandesh31@gmail.com

तस्वीर बोल उठी-17 के अन्तर्गत काफी संख्या में रचनाएं प्राप्त हुई सर्वश्रेष्ठ रचना को यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

भारत मां की शान हो तुम
राष्ट्र भक्ति का गान हो तुम
देश के जन तुम पर नाज करें
हिंद की सेना अभिमान हो तुम।

राजेन्द्र कुमार शर्मा
जयपुर (राज.)

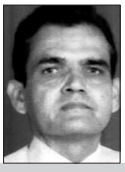

चलें किताबों की ओर...

ममता पंडित
सह-संपादक
देवास (मध्य प्रदेश)

दृश्य-1

रेल का वातानुकूलित कोच, सभी सुख सुविधाओं से लैस, किसी जमाने में यात्रियों के ठहाकों और बहस से गुंजायमान रहने वाले इस कोच में एक खामोशी पसरी है, बस वही कुछ लोग आपस में बात कर रहे हैं जो चार्जिंग पॉइंट के खाली होने के इंतज़ार में हैं। सब कुछ वही है लेकिन वो कहीं नहीं दिखाई दे रही।

दृश्य-2

आज मीरा का 40 वां जन्मदिन है, एक पूरा कमरा तोहफों से भरा है। एक से बढ़कर एक महंगे और नायाब तोहफे, लेकिन मीरा की निगाहें जाने क्या ढूंढ़ रही हैं और अंत में वह निराश होकर बैठ गई। उन नायाब तोहफों में उसे वो कहीं नहीं मिली।

दृश्य-3

पार्क में शाम के वक्त बच्चों का अच्छा जमावड़ा रहता है यहां आकर इनकी बातें सुनने में शर्मा जी को बड़ा मजा आता है। खिलौनों, स्कूल, मम्मी-पापा की लड़ाई मासूमियत के साथ सबकुछ बता देते हैं बच्चे अपने दोस्तों को। इन्हीं बातों का आनंद लेते हुए शर्मा जी हैरान है की इतनी सारी बातों के बीच वो कहीं नहीं है।

इन सभी दृश्यों में एक ही चीज जो कल हुआ करती थी और आज नहीं है वो हैं किताबें। आज से कुछ वर्ष पहले का रेल का सफर याद कीजिये आपको हर तीसरे यात्री के हाथ में कोई

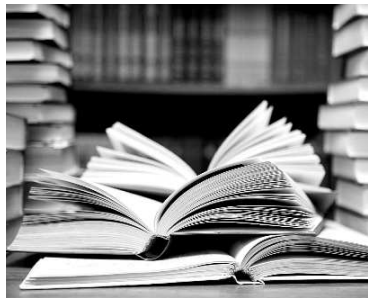

किताब नजर आती थी। अपने किसी खास के जन्मदिन पर भेंट देने के लिए उसकी पसंदीदा पुस्तक हमारा पहला विकल्प होती थी। आजकल तो लिफाफों के दौर ने तोहफों की परिभाषा ही बदल दी है और बच्चों के मुँह से किताबों का नाम सुने तो जैसे अरसा बीत गया। हमारे पास बाल पत्रिकाएं होती थीं, जिनकी कविताएं, कहानियां हमारी बातों का अहम हिस्सा होती थी।

चिंता का विषय है कि हमारी आने वाली पीढ़ी की सोच और विचारों से किताबें गायब हैं। अपनी पाठ्य-पुस्तकों के अलावा वे और कौन सी किताबें पढ़ पाते हैं? मनुष्य ने हर दौर में प्रगति की है, अपनी जीवन यापन के संसाधन जुटाने के बाद उसने अपने जीवन को आसान से आसान बनाने की तकनीक दिन-ब- दिन विकसित की। लेकिन विकास की इस दौड़ में अगर हमने बहुत पाया है तो बहुत कुछ खोया भी है।

आज सब कुछ दृश्य-श्रव्य (audio-visual) माध्यम में उपलब्ध है। हमें सिनेमा, टीवी, कंप्यूटर, मोबाइल पर सब कुछ दिखाई और सुनाई देता है। हम कुछ पढ़ना नहीं चाहते। आप किसी भी पुस्तकों के जानकार से पूछिये कि उन्हें किसी किताब पर बनी हुई कोई फिल्म या नाटक अच्छा लगा या उस कहानी को पढ़ते हुए उसे महसूस करना, और उनका जवाब हमेशा यही होता है कि पुस्तक ज्यादा अच्छी है।

किसी किताबों को पढ़ते हुए आप अपने जहन में किरदारों के चेहरे गढ़ते हो, उन्हें अपने पसंदीदा रंग पहनाते हो, कुछ अनकहा सा समझने की कोशिश भी करते हो जो लेखक ने आपके लिए छोड़ दिया है। इसलिए एक ही किताब को पढ़ने का अनुभव भी सबका भिन्न होता है।

दृश्य-श्रव्य माध्यम में आपको तैयार खाना परोसा जा रहा है, निर्देशक की पसन्द के अनुसार। आपकी पसंद और नापसंद से उनका कोई सरोकार नहीं है। आपके पास सोचने-समझने को कुछ बाकी नहीं रह जाता। कुछ कलाकार, फिल्मकार बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं लेकिन फिर भी वो आपको एक जुनून की तरह किताब में डूबने का और किसी भी कीमत पर जल्दी से जल्दी उसके आखिरी पृष्ठ तक पहुँचने कि उत्सुकता वाला एहसास नहीं दे सकते। मानव सभ्यता का पूरा सफर पुस्तकों में दर्ज है। सदियों से हर सभ्यता, हर भाषा में कुछ न कुछ लिखा गया है, लेकिन आजकल किताबों पर जमीं धूल की परत मोटी होती जा रही है और हमारी कल्पना की उड़ान छोटी। प्रगति के नए सोपान चढ़ते हुए हम अपने गौरवशाली सभ्यता के इतिहास से दूर होते जा रहे हैं। कुछ ही महीनों में हर तकनीक का नया विकल्प आ जाता है किंतु एक बार लिखा हुआ कभी मिटाया नहीं जा सकता। सदियों पहले लिखा हुआ भी आज उतना ही प्रासंगिक है। किताबें आज और कल को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी हैं। जरूरत है कि हमें इस धरोहर की तरफ, किताबों की तरफ लौटने की। आईये फिर शुरू करें किताबें तोहफों में देने की परंपरा, रेल के सफर पर साथ ले चलें कुछ पढ़ने को, आइए नई पीढ़ी को नई किताबों से आने वाली खुशबू से परिचित कराएं। उन्हें बताएं कि वे पढ़ें, डूबें किताबों के सागर में और चुन लाएं ज्ञान के मोती।

किताबें जो जिंदगी बदल दे

अगर आपको पढ़ना आता है और आप फिर भी नहीं पढ़ते तो आप में और निरक्षर में कोई फर्क नहीं है' इस बात का तात्पर्य है की पढ़ा लिखा होने के बाद भी यदि हम सबसे कीमती खजाना अर्थात् किताबें जो की बहुत सारे अनुभवों व अध्ययन के बाद कोई लिखता है को नहीं पढ़ते हैं। मतलब स्पष्ट है हम जानबूझ कर उस खजाने को ठुकरा रहे हैं।

उदय सिंह

मोटिवेशनल स्पीकर

किताबें वो जरिया हैं जिनसे दुनिया में बदलाव आया है और आगे भी आता रहेगा। अब यहाँ पर जब बात किताबों के अध्ययन की हो रही है तो यह हमारे स्कूली व कॉलेज किताबों की नहीं है। यह बात हो रही है उन किताबों की जो अलग-अलग क्षेत्रों, व्यक्तियों, अनुभवों, विज्ञान, तरीकों, दक्षताओं व इतिहास पर लिखी गयी है। इन सबके अध्ययन से न केवल व्यक्तिगत सफलता को पाया जा सकता है बल्कि एक नए समाज व देश के निर्माण में ही इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

स्वामी विवेकानंद ने काफी गहन अध्ययन किया था भारतीय संस्कृति व धर्म का तभी तो वो बहुत प्रभावकारी तरीके से पूरी दुनिया के सामने अपनी बात रख पाए। अब्दुल कलाम जी बहुत अध्ययन करते थे। उन्होंने स्वयं भी कई अच्छी किताबें लिखीं। मैं यहाँ पर आठ ऐसी बेहतरीन किताबों के बारे में बताने जा रहा हूँ जो न केवल आपको एक नयी सोच देंगी बल्कि आपके जीवन के सब सवालों के जवाब भी देती है। इन किताबों ने व्यक्तिगत रूप से मुझे बहुत लाभ दिया है और नतीजा मैं अपने लेखन और मोटिवेशनल स्पीकिंग के करियर को एक अच्छे तरीके से कर पा रहा हूँ।

भगवत गीता एज इट इज (गीता)

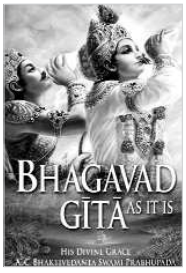

भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए ज्ञान का उल्लेख जो आज भी जीवन के प्रत्येक पहलू में उतना ही सार्थक है। आधुनिक जीवन में सफलता के, व्यापार के, रिश्तों के सवालों के जवाब इस में आपको मिलते हैं। दुनिया की बहुत सारी संस्थाओं व यूनिवर्सिटीज में पढ़ी जाने वाली इस पुस्तक का अध्ययन आपके जीवन को एक नयी दिशा दे सकता है।

ब्लैक बॉक्स थिंकिंग (मैथ्यू सेद)

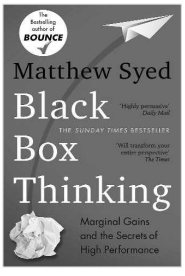

यह किताब हमें सिखाती है कि कैसे गलतियों से सीखा जाये और एक आगे बढ़ने का नजरिया व माइंड सेट विकसित किया जाये। जो लोग हमेशा सुधार करना और आगे बढ़ना चाहते है उनके लिए यह किताब महत्वपूर्ण है।

विंग्स ऑफ फायर (एक आत्मकथा)

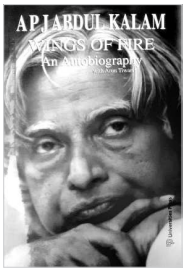

अब्दुल कलाम जी द्वारा लिखित यह किताब उनके जीवन के बहुत सारे प्रेरणादायक पहलुओं को बताती है और आज की पीढ़ी को प्रेरित करती है किसी भी कार्य को श्रेष्ठता तक कैसे ले जाया जाये।

विनर (एलेस्टर कैम्पबेल)

इस किताब में वो तरीके जो किसी भी तरह की सफलता के लिए जरूरी है। साथ ही इस किताब में कुछ खास लोगों से कैसे सीखा जाये यह भी बताया गया है।

ऑरिजिनल्स

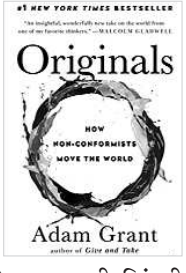

एडम ग्रांटस द्वारा लिखित यह किताब बताती है की कैसे हम सब समान है और निरंतरता और सुधार के साथ कैसे हम अपनी जिंदगी को बेहतर बना सकते हैं। यह किताब उन सभी को अवश्य पढ़नी चाहिए जो चाहते हैं कि उन्हें एक श्रेष्ठ जिंदगी को जीना है।

द मीनिंग ऑफ 21 सेंचुरी (जेम्स मार्टिन)

इक्कीसवीं सदी के बारे बहुत सारी जानकारी उसकी समस्याएँ और आने वाले समय में उनका प्रभाव। अगर आप एक जागरूक लीडर है और इस दुनिया के लिए कुछ करना चाहते हैं तो यह पुस्तक आपको उन सब पहलुओं से अवगत कराएगी जो इस सदी में है और साथ उनके कुछ समाधान भी।

स्टार्ट विद व्हाई (साइमन सिनेक)

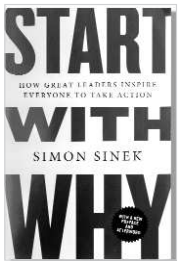

यह एक ऐसी किताब है जो प्रत्येक उस व्यक्ति को अवश्य पढ़नी चाहिए जो अर्थपूर्ण कार्य कर रहा है या करना चाहता है। इस किताब में बताया गया है कि यदि आपको अपने किसी भी काम को करने की वजह स्पष्ट है तो आप प्रेरित रहेंगे और यदि वह नहीं है तो कैसे पता की जाये। खासकर युवाओं को यह जरूर पढ़नी चाहिए।

हैप्पीनेस (मैथ्यू रिचर्ड)

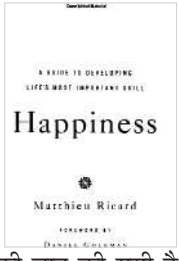

इस किताब में बहुत सारे ऐसे तरीकों और अनुभवों की बात की गयी है जिससे यह समझ आता है की खुश होना एक स्किल है और कोई भी यह सीख सकता है। मस्त और खुश जिंदगी जीने के बारे में ज्यादा जानने वालों के लिए यह सार्थक किताब है।

यद्यपि इनके अलावा भी बहुत सारी अन्य किताबें है जो अलग-अलग विषय पर आपको बहुत सार्थक जानकारी व समझ देती है। अर्थात् एक ऐसा तरीका जिससे आप एक ही जिंदगी में बहुत सारे अनुभव व समझ को विकसित कर सकते हैं। इसलिए अच्छी किताबें स्वंय भी पढ़े और दूसरों को भी प्रेरित करे अध्ययन करने के लिए। क्योंकि एक जागरूक इंसान ही भविष्य को बेहतर बना सकता है।

'कुछ किताबें' हमारी ज़िंदगी का आईना होती हैं

डॉ. सुषमा गुप्ता

फरीदाबाद हरियाणा

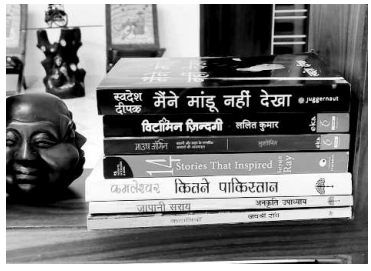

'मैं ने मांडू नहीं देखा' ऐसी ही एक बेहद मुश्किल किताब है जिसे पढ़ने के लिए बहुत हिम्मत और सब्र की जरूरत है।

अमूमन कोई भी किताब दो-तीन दिन लेती है, कोई-कोई तो कुछ घंटों में पूरी हो जाती है, पर यह किताब मैंने चार महीने में पांच बार बीच में छोड़ी। एक्यूट डिप्रेशन घेरने लगता। मेरे जहन से निकल कर छिपकलियां, सांप, परछाइयां, सब मुझ पर रेंगने लगते। मेरे अवचेतन में रह रहे अनगिनत सच और वहम गड़मड़ हो मुझे ही निगलने लगते और मैं यह किताब अपने से दूर रख देती। अपनी अति संवेदनशील प्रवृत्ति के चलते हम अक्सर मानसिक बीमारी के गर्त में समाने लगते हैं और इस कदर धंस जाते हैं कि डॉक्टरी इलाज के दरवाजे पर घुटने टेकने पड़े। अतीत में ऐसा हो चुका है इसलिए भी अब मैं खुद को इतना दु:ख देने से बचती हूँ। पर कभी कोई किताब बीच में न छोड़ने की बुरी आदत ने आखिरकार यह किताब भी पूरी करवा ही दी , चाहे चार महीने लगे।

पॉल कोहेलो की 'इलेवन मिनट्स' के बाद यह दूसरी बेहद तकलीफ़ दायक किताब रही मेरे लिए जिसके शब्दचित्र, जीते जी मेरा पीछा कभी नहीं छोड़ेंगे। स्वदेश दीपक आप जहाँ भी हैं बहुत प्यार पंहुचे आप तक...

इस दौरान एक और किताब जिसे दो महीने लगे मुझे खत्म करने में वह है कमलेश्वर जी की 'कितने पाकिस्तान'

उफ्फफ!!!

इसमें इतनी सदियों का रक्तरंजित इतिहास दर्ज है कि आप पढ़कर भौंचक्का रह जाएंगे । इतना कुछ जो आपने कभी कहीं नहीं पढ़ा होगा वह सब एक ही जगह इस तरह से समाहित किया गया है कि आप के दिल दिमाग को झंझोर कर रख देगा। विश्व के हर कोने में होने वाले अनगिनत अमानवीय कृत्य जिनका आधार ही सता की भूख और पॉवर गेम रहा, इस किताब में सिलसिलेवार दिया गया है।

इतना कुछ है इस किताब में कि आप एक गो में इसे पढ़ ही नहीं सकते।

इन दो बेहतरीन किताबों के साथ जो और खूबसूरत किताबें पढ़ ली गईं हैं पिछले कुछ समय में वह हैं सुशोभित की 'माउथ ऑर्गन'

ललित जी की 'विटामिन ज़िंदगी' इनके अलावा, अनुकृति उपाध्याय की 'जापानी सराय' जैसे मेरे मन की कहानियों की किताब है । बेहद प्यारी। जयश्री रॉय की 'ग़ौरतलब कहानियाँ' जयश्री की भाषा बेहद समृद्ध है और प्रवाह ऐसा कि पानी सा बहती है कहानी।

सुषमा

विद्या

नीलम

महिला सशक्तिकरण की खुली किताब है इनका जीवन

महिला सशक्तिकरण त्रिकोण हैं यह तीन महिलाएं जिनका जाना भारतीय समाज के लिए कभी ना भरा जा सकने वाला नुकसान है। इस त्रिकोण के तीनों स्तंभों का एक दूसरे से अलग पर मजबूत अस्तित्व था, पर एक धागा जो इन तीनों स्तंभों को बांधकर एक त्रिकोण बनाता था वह था अपनेपन की सादगी, बिना बनावट वाली सरलता आडंबर रहित व्यवहार फिर भी ओज से परिपूर्ण प्रभावशाली भारतीयता युक्त व्यक्तित्व।

नित्या शुक्ला
सह-संपादक
इंदौर (मध्य प्रदेश)

वर्तमान में जब भारतीय परिवेश के चिन्ह समाज से लगभग विलुप्त होते जा रहे हैं, ऐसे समय में इन तीनों का भारतीय संस्कृति से खुद को जोड़कर अपने-अपने कार्य क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रदर्शन करना सही मायने में महिला सशक्तिकरण को परिभाषित करता है। शोरगुल और कान फोडू आडंबर से दूर सही मायने में महिला सशक्तिकरण। साड़ी, बिंदी और मनमोहक मुस्कान के साथ अपने-अपने कार्य क्षेत्र में दमकता हुआ ध्रुवतारा थीं त्रिशक्ति। सबसे पहले बात करते दूरदर्शन की तेजस्विनी के नाम से विख्यात नीलम शर्मा जी की जिन्होंने कैंसर रूपी दानव के सामने लड़ते-लड़ते हार मान ली। सौम्यता में तेजस्वी होना अगर कोई परिभाषित कर सकता था तो मेरे हिसाब से नीलम जी ही थी। उन्हें नारी शक्ति सम्मान सहित अन्य कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका था। उनका खबरों को पढ़ने और बताने के शांत और गंभीर तरीके ने 90 के दशक के लोगों के जहन में अपनी अमिट छाप बना ली थी जिसकी जगह शायद ही अब और कोई ले पाए।

उनको शालीनता के साथ एंकरिंग करते देखकर कई युवाओं ने पत्रकारिता में अपना कैरियर बनाने के सपने देखे और उन्हें पूरा भी किया। आज से 20 साल पहले जब इतने न्यूज चैनल नहीं होते थे तो टीवी पर समाचार के बारे में सोचते ही नीलम शर्मा जी का चेहरा ही नजर आता था। वर्तमान में भी स्थिति कुछ अलग नहीं थी। नीलम जी कुछ दिनों पहले तक दूरदर्शन में सक्रिय रूप से एंकरिंग और समाचार भाषण करती रही थी। मुझे याद है सन् 2000 में जब मुझे इंदिरा गांधी भारतीय युवा पुरस्कार मिला था तो मुझे पुरस्कार मिलने से ज्यादा इस बात की खुशी थी कि उस कार्यक्रम का संचालन नीलम शर्मा जी कर रही थीं। उनके प्रभावशाली सम्मोहक व्यक्तित्व से नजर हटाना वाकई में मुश्किल था। आजकल जब पत्रकारिता गला फाड़कर चिल्लाने का नाम ही रह गया है उस समय सौम्य और शांत तरीके से पत्रकारिता के कार्य को करना अपने आप में क्षेत्र में उनकी महारत की दास्तां कहता है।

किसी के व्यक्तित्व का लावण्य और शिष्टता अगर उनके जाने के बाद भी मन के दरवाजे पर दस्तक देती रहे तो मानो उनका जीवन सफल हो गया नीलम शर्मा जी भी ऐसे ही व्यक्तित्वों में से एक थीं और कुछ ऐसा ही व्यक्तित्व था विद्या सिन्हा जी का। विद्या सिन्हा जी को अगर भारतीय सिने जगत की रजनीगंधा कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। विद्या सिन्हा जी को 70 के दशक में एक ऐसी अदाकारा के रूप में जाना जाता था जो रुपहले पर्दे पर बड़ी छाप वाली साड़ी में नजर आती थी और उनकी सादगी पूर्ण उपस्थिति किसी को भी सम्मोहित कर सकती थी। विद्या सिन्हा जी का नायक उन दिनों एक साधारण व्यक्ति हुआ करता था। गर्ल नेक्स्ट डोर की परिभाषा शायद विद्या सिन्हा जी से ही शुरू हुई होगी। उनके सौम्य और सादगी पूर्ण व्यक्तित्व से प्रभावित हो कवि व्योमेश शुक्ल ने अपने काव्य संग्रह 'फिर भी कुछ लोग' में उन्हीं के ऊपर आधारित एक कविता लिखी है।

थोड़ी देर में आएगा दिनेश ठाकुर,
हाथ में रजनीगंधा के फूल लिए।
या अमोल पालेकर भी आ सकता है,
या मैं भी आ सकता हूँ।

कोई ना कोई आएगा और उसके दरवाजा खटखटाते ही फिल्म शुरू होती है।

सोचिए कितना आकर्षण रहा होगा उस सादगी में कि एक कवि ने अपनी किताब की एक कविता उन्हें ही समर्पित कर दी और यह मैं दावे के साथ कह सकती हूं उस जमाने की लगभग सभी लड़कियों को लगा होगा कि अगर विद्या जैसी साधारण लड़की प्रेम पा सकती है कि तो उनके जीवन में भी प्रेम कभी ना कभी दस्तक देगा।

भारतीय सिने जगत में उनकी कमी उन्हीं के गानों की चंद पंक्तियों द्वारा जाहिर होती है

न जाने क्यों?
होता है यूं जिंदगी के साथ
अचानक ये मन
कभी किसी के जाने के बाद
करें फिर उसकी याद छोटी-छोटी सी बात
छोटी-छोटी सी बातों का मानो एक जमाना ही खत्म हुआ। अगर जमाने बात करें तो वैश्विक रूप में भारतीय नारी शक्ति की छाप छोड़कर जो युग की शुरुआत हुई है उसकी प्रतिनिधि थी श्रीमती सुषमा स्वराजजी। पर फिर भी जब भी मैं सुषमा स्वराज जी की याद करने बैठती हूं तो मुझे उनका नेता वाला रूप नहीं याद आता, याद आती है तो बस लाल साड़ी और पूरे सिंगार से सजी-धजी उनकी करवा चौथ वाली छवि। विदेश मंत्रालय जैसे एक दुर्गम विभाग को भी किस तरह सरल और सुगम तरीके से संचालित किया जा सकता है यह एक स्त्री की मैनेजमेंट कला ही हो सकती है। किसी के एक ट्वीट पर किस तरह त्वरित कार्यवाही कर उसके पास सहायता पहुंचाई जाए, यह एक मां जैसे स्नेह के साथ एक स्त्री ही कर सकती है। सुषमा स्वराज जी एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने ना जाने कितने मार्गों पर सबसे पहला कदम रखने की हिम्मत दिखाई। सुषमा जी, नीलम जी और विद्या जी सही मायने में महिला सशक्तिकरण का प्रमाण और उदाहरण थीं। किस तरह .....घर और देश .... राजनीति और गृहस्थी ..... परिवार और कर्तव्य, पत्रकारिता और शिष्टता..... अभिनय और सादगी के बीच संतुलन बनाकर एक स्त्री कार्य कर सकती है यह इन तीनों स्त्रियों के व्यक्तित्व और जीवन से हम सबको सीखना चाहिए। सादर नमन और श्रद्धांजलि है ऐसे व्यक्तित्वों को। ऐसा लगता है मानो सादगी और भारतीयता का एक युग समाप्त हो गया है। पर कहते हैं उम्मीद पर दुनिया कायम है और इसी उम्मीद के चलते कि सही महिला सशक्तिकरण का यह दौर इसी तरह जारी रहेगा।

रोजाना मैं ऐसी

कई स्त्रियों को देखती हूं जो अपने बच्चों का टिफिन तैयार कर, उन्हें स्कूल भेज, अपनी वर्दी पहन..... कांधे के सितारों को चमका अपने कर्तव्य निर्वहन के लिए अपने सफर पर निकल पड़ती हैं.....हाँ मुझे उनमें सुषमा स्वराज जी दिखाई देती हैं.....कुछ और ऐसी प्रेरणादायक स्त्रियों से भी मुलाकात होती है जो हाथों में मेहंदी लगा,

हरी हरी चूड़ियां पहन,
तीज का त्योहार मना.....

घर के कामों को निपटा, अपने चाय के प्याले के साथ दैनिक अखबार पढ़ते हुए देश और समाज पर बेबाक अपने विचार रखती हैं, हाँ मुझे उनमें नीलम शर्मा जी दिखाई देती है... और वह स्त्रियां भी मिलती हैं जो घर की छतों पर बैठी गुनगुनी धूप सेकते हुए मटर की फलियों में से दाने निकालते हुए अपने बच्चों का होमवर्क, उनसे जुड़ी सारी चिंताएं और नवीन अर्जित ज्ञान को एक दूसरे से बांट कर खिलखिला रही होती हैं। हाँ मुझे उन साधारण स्त्रियों में विद्या सिन्हा जी दिखाई देती है। आइए, पढ़ें और समझें सही महिला सशक्तिकरण की परिभाषा इन महिलाओं के जीवन की किताब से। **जय हिंद**

किताब की बात

बात थी
किताब थी
किताब की बात थी
बात में किताब थी
किताब में बात थी
बात बात में किताब थी
किताब किताब में बात थी
किताबिया बात थी
किताब में बातूनी थे
बातूनी किताब थी
बातूनियों की किताब थी
बातूनियों की बात थी
बात बात पे किताब थी
हर बात किताब थी
किताब में हर बात थी
बात थी किताब की
किताब की ही बात थी।

महेश कुमार
जयपुर (राजस्थान)

पुस्तक मिली

लेखक - चन्द्रभानु भारद्वाज
पुस्तक - भटक्यो बहुत प्रकाश
प्रकाशक - मोनिका प्रकाशन
संस्करण - 2019
मूल्य - 400/-

हिन्दी को संवाद की जरूरत है

अभिषेक यादव
राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारी

14 सितम्बर यानी हिंदी दिवस पर चर्चा की शुरुआत इसी प्रश्न से करते हैं कि ये 14 सितम्बर को ही क्यों मनाया जाता है। 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा में एक मत से यह फैसला लिया गया कि भारत की राजभाषा हिन्दी होगी। इसके बाद हिन्दी के प्रचार-प्रसार और जनमानस की मान्यता के लिए वर्धा स्थित राष्ट्र भाषा प्रचार समिति ने हिन्दी दिवस मनाने का अनुरोध किया और 14 सितंबर, 1953 से पूरे भारत में हर साल 14 सितंबर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। हिन्दी दिवस पर स्कूलों, कॉलेजों और सरकारी दफ्तरों में अनेक कार्यक्रमों जैसे निबंध, कविता पाठ और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। वहीं 10 जनवरी, 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा नागपुर में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन के बाद से प्रतिवर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

लेकिन आजकल हिंदी दिवस मनाने के मायने बदल गए हैं। हिंदी दिवस के दिन वातानुकूलित कक्षों में गोष्ठियों के लिए भारी भरकम बजट स्वीकृत होता है। वरिष्ठ कवियों के गले में माला डाली जाती है। युवा लेखकों को इसकी निरर्थकता पर व्यंग्य लिखने को मिलता है। और कुछ 'क्यूट' से लोग जो पूरे साल भर अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं, उन्हें हिंदी दिवस की बधाई देने का मौका मिलता है। ट्विटर, फेसबुक, व्हाट्सएप पर शुभकामना संदेश भेजे जाते हैं। कुछ को हिंदी के हालात पर तरस खाने के लिए एक दिन मिल जाता है। क्या वाकई हिंदी के हालात इतने दयनीय हो गए हैं?

2016 में डिजिटल माध्यम में हिंदी समाचार पढ़ने वालों की संख्या 5.5 करोड़ थी जो 2021 में बढ़कर 14.4 करोड़ होने का अनुमान है।

आज हिंदी विश्व में चौथी ऐसी भाषा है जिसे सबसे ज्यादा लोग बोलते हैं। 2016 में डिजिटल माध्यम में हिंदी समाचार पढ़ने वालों की संख्या 5.5 करोड़ थी जो 2021 में बढ़कर 14.4 करोड़ होने का अनुमान है। विभिन्न सर्च इंजन और वेबसाइट हिंदी में सामग्री उपलब्ध कराने लगे हैं। सर्च इंजन गूगल के अनुसार हिंदी में कंटेंट पढ़ने वाले हर साल 94 फीसदी बढ़ रहे हैं जबकि अंग्रेजी में यह दर सालाना 17 फीसदी है। ई-कॉमर्स वेबसाइट, सोशल नेटवर्किंग साइट्स यथा-फेसबुक, यू-ट्यूब भी हिंदी वर्जन में खासे लोकप्रिय हो रहे हैं।

लेकिन इन सबके बावजूद आजकल अलग अलग भाषा-ज्ञान को श्रेष्ठता और हीनता से जोड़ कर देखा जा रहा है। मैंने इंजीनियरिंग की है, हिंदी में लिखता-बोलता भी हूँ। लोग कहते हैं-इंजीनियर होकर अच्छी हिंदी कैसे? अरे भाई ये डिग्री का भाषा से क्या संबंध जोड़ दिया आपने? भाषा तो अभिव्यक्ति का माध्यम है और मैं हिंदी में स्वयं को सहज अभिव्यक्त कर पाता हूँ। यहां यह समझना भी आवश्यक है कि हिंदी-अंग्रेजी दोनों ही केवल अभिव्यक्ति के माध्यम हैं और दोनों का ही ज्ञान होने पर गर्व और अज्ञान होने पर क्षोभ का भाव समान रूप से ही होना चाहिए। और तो और अंग्रेजी न आने पर मूक बनते है तो हमें जुबां हिंदी ही देती है और मूक को जुबां देने वाली भाषा कभी संकट में हो ही नहीं सकती बस बोलते रहिये क्योंकि हिंदी को 'सहानुभूति' की नहीं अपितु 'संवाद' की जरूरत है-

हिंदी है तो हूँ मैं
हिंदी है तो गुनगुनाता हूँ मैं
हिंदी है तो मुस्कुराता हूँ मैं
हिंदी से ही तो हूँ मैं, हिंदी है तो हूँ मैं।

मेरा बचपन मेरे कंधों पर: बाल मजदूरी की बेड़ियां

भारती
पीएच.डी., हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश

'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' बालश्रम और संघर्ष का दस्तावेज है। यह श्यौजराज सिंह बेचैन की आत्मकथा का प्रथम भाग है जिसमें 12 अध्यायों में विभाजित एक दलित बालक के श्रम की वेदना समाहित है। या यूँ कहे कि 12 अध्यायों में विभाजित दलित बालक के बालश्रम की वेदना का विस्फोट है। जिसमें उनकी आरम्भिक जीवन यात्रा से लेकर कक्षा दस तक के शिक्षा काल का सजीव चित्र अंकित किया गया है।

इस आत्मकथा को पढ़ते हुए कहा जा सकता है कि श्यौराज सिंह बेचैन ने मुख्यधारा से दूर हाशियें पर पड़े एक गाँव के स्कूल से पढ़ते हुए आज दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रोफेसर होने तक की राह खुद बनायी है। यह पुस्तक केवल मात्र एक आत्मकथा नहीं है, बल्कि यह पुस्तक इस सत्य को उद्घाटित करती है कि एक दलित का बचपन कितना यातनामय हो सकता है। ज्ञान की प्रक्रिया का हिस्सा बनने के लिए इसे किस हद तक संघर्ष करना पड़ता है।

बालक का संघर्ष उसकी उम्र के पाँच-छह वर्ष बाद से ही शुरू होता है। जब उनके पिताजी का देहांत होता है। पिता की मृत्यु के पश्चात् ही इस आत्मकथा में बालश्रम की दास्तां की शुरूआत होती है। जिस उम्र में पिता के कंधों पर बैठकर बच्चे मेला देखने जाते हैं उस उम्र में बच्चे के सिर से पिता का साया उठ जाना ऐसा प्रतीत होता है जैसे

बिना छत के मकान। पिता चाहे अमीर हो या गरीब वह अपने बच्चे के लिए बादशाह होता है। ऐसी ही स्थिति थी श्यौराज सिंह के घर की, आर्थिक स्थिति पिता के समय भी अच्छी नहीं थी, किंतु उस समय तक बालश्रम करने की आवश्यकता भी नहीं पड़ी थी। पिता के न होने का दुःख निम्न पंक्तियों से स्पष्ट होता है- चाचा (पिता) के गुजरने के बाद अपने इस घर में हमारा कोई पालनहार नहीं था। हम बालश्रम के लिए तत्पर थे, पर गाँव में भी काम नहीं मिलता था। अशिक्षित माँ, भूमिहीन घर, नाबालिग बच्चे आय का कोई स्रोत नहीं, घरवाला गया तो घर ही उजड़ गया।

इस आत्मकथा में दुःखों, तकलीफों, अभावों की बेहद महीन, गहरी तहें और गिराहें है, जो एक अनाथ बच्चे के संघर्ष का महाकाव्य कहा जा सकता है। जब हम आजाद भारत भूमि पर जन्म लेने वाले दलित बालक के बचपन को देखते हैं तो यह हमारे समक्ष बड़ा भयानक, कुरूप दृश्य प्रस्तुत करता है जिसमें आजाद देश के एक गुलाम समाज का बालक जिस जद्दोजहद से गुलामी की जंजीरों को तोड़कर सम्पूर्ण समाज के समक्ष प्रेरणास्रोत बनकर आया वह आजादी के आंदोलन से किसी भी मायने में कम नहीं है।

Many Lives, Many Masters

इस पुस्तक को पढ़ना मेरे लिए आम बात नहीं थी क्योंकि इसकी दो वजह थीं एक तो जिसने मुझे इस पुस्तक को पढ़ने के लिए कहा, या यूं कहें कि प्रेरित किया वो मेरे दिल के बहुत करीब थी और दूसरी वजह थी कि मैं भी जीवन में छुपे रहस्य जो हमारे रिश्तों में प्यार और नफरत की वजह बनते हैं, उन्हें समझना चाहती थी और सच कहूं तो यही हुआ। इस पुस्तक को पढ़ने के बाद जीवन को एक नई दिशा मिली, इन रिश्तों की गुत्थी को सुलझाने में, इसकी सबसे खास बात यह रही कि आज जो हम रिश्ते जी रहे हैं वो चाहे प्यार से बंधे हों या चाहे नफरत से वो हम से कहीं न कहीं जुड़ते जरूर हैं। यही सार है इस पुस्तक में कि आज कुछ हमारे पास ऐसे खास रिश्ते हैं जो न जाने किस पल इतने मजबूत हो जाते हैं और हमें पता भी नहीं चलता। बहुत मायने रखते हैं वो हमारे लिए, और अगर कोई हमसे इसके पीछे की वजह पूछे तो शायद हमारे पास इसका कोई जवाब नहीं होगा। तभी तो कई बार हम कहते हैं न कि पूर्व जन्म का रिश्ता है और ये पुस्तक इस बात का समर्थन करती है कि यूं ही नहीं होते ये रिश्ते, ये हमसे जुड़े रहते हैं किसी न किसी कारणवश। इस तरह एक किताब हमको किस तरह जीवन जीना और इसकी बारीकियां सिखा जाती है, एक प्रसिद्ध मनोचिकित्सक Dr. Brian L. Weiss जो कि एक वैज्ञानिक भी थे उनकी युवा मरीज की सच्ची कहानी है यह किताब 'मैनी लाइव्स मैनी मास्टर्स' जिसने उन दोनों की ज़िंदगी बदल दी।

माला रोहित कृष्ण नंदन
जयपुर

मेरी प्रिय पुस्तक 'रामचरितमानस'

पुस्तकों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। ये मानव के ज्ञान को विस्मृत होने से बचाती है। पुस्तकें विभिन्न देशों की विचारधाराओं को एक आधार पर सोचने के लिए बाध्य करती है। आज भले ही सोशल मीडिया का जमाना है। पर पुस्तकों में आज भी एक कशिश होती है। जो समाज पर व्यापक प्रभाव डालने की अपार क्षमता रखती है। ये अकेलेपन की सच्ची साथी होती है। पुस्तकें ही है जो लेखक को अमर बना देती है। 'रामचरितमानस' मेरी सबसे प्रिय पुस्तक इसलिए है, क्योंकि यह एक कहानी का संग्रह मात्र ही नहीं है। अपितु हमें यह मानव-जीवन के कर्तव्यों का बोध कराती है। त्याग व सहनशीलता का पाठ पढ़ाती है। आज के दौर में जहाँ भाई, भाई का दुश्मन बना हुआ है, परिवारों का विघटन हो रहा है। ऐसे में रामचरितमानस हमें सही राह दिखाती है। हमें अपने फर्ज व कर्तव्यों का बोध कराती है। जिंदगी जीने का सही तरीका बताती हैं। इसमे मानव चरित्र-निर्माण हेतु सभी तत्व विद्यमान हैं।

सात खंडों में विभाजित रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान जैसे महान चरित्रों की अवधारणा कर उन्होंने आदर्श जन समाज के संगठन का स्वरुप निर्धारित किया है। रामचरितमानस में महा पराक्रमी राम का संपूर्ण जीवन एक ट्रेजेडी रहा है। बाल्यवस्था में ताड़का वध फिर पिता की आज्ञा से 14 वर्ष के वनवास से लेकर सीता-हरण फिर रावण का वध उसके बाद राम राजतिलक, फिर सीता के वनवास तक सारी रामचरितमानस में राम ने हमेशा कष्ट ही उठाये हैं। पर इतने कष्टों को झेलने के बाद भी राम ने कही पर भी मर्यादाओं का दामन नहीं छोड़ा है।

आज्ञाकारी पुत्र, एक अच्छे भाई व मित्र, एक अच्छे स्वामी, अच्छे योद्धा और एक अच्छे राजनीतिज्ञ के सारे गुण राम में विधमान है। रामचरितमानस को पढ़ने से मानव को धर्म और नीति दोनों का सही ज्ञान होता है। आज हमारे बच्चों को राम के आदर्शों को अपनाने की जरूरत है। तभी हमारा हिंदुत्व, हमारी धर्म, संस्कृति जीवित रहेगी। मेरी यह प्रिय पुस्तक जहाँ ज्ञान और व्यवहार कौशल में वृद्धि करती है, वहीं आदि से अन्त तक मनोरंजन व रोचकता का खजाना भी है। यही इसे अन्य पुस्तकों में विशिष्ट और महत्वपूर्ण स्थान प्रदान कराता है।

सीता देवी राठी
कूच बिहार
(पश्चिम बंगाल)

गुरु हैं पुस्तकें

पुस्तकें हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वे समय-समय पर एक अच्छे मित्र व गुरु की भूमिका अदा करती हैं। किसी व्यक्ति को जीवन में सफलता दिलाने में इनका बहुत बड़ा योगदान होता है। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने सच ही कहा है कि 'मैं नरक में भी उत्तम पुस्तकों का आदर करूँगा क्योंकि इनमें वह शक्ति है जो नर्क में भी स्वर्ग का सुख प्रदान कर सकती है। मेरा विषय संगीत है। मैंने संगीत विषय पर अनेक पुस्तकें पढ़ीं। वैसे तो हर पुस्तक ने कुछ ना कुछ ज्ञान दिया परंतु इन सब में मुझे 'संगीत विशारद' तथा 'राग विशारद' ग्रंथों ने मुझे अधिक प्रभावित किया।

संगीत विशारद

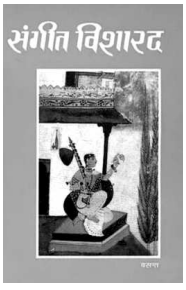

संगीत विशारद एक ऐसा ग्रंथ है जिसे पढ़ने के बाद अन्य ग्रंथों के अध्ययन की आवश्यकता नहीं रह जाती। प्रथम वर्ष से अष्टम वर्ष के विद्यार्थियों को यह पुस्तक बहुत लाभकारी है। इसके लेखक बसंत तथा संपादक डॉ लक्ष्मीनारायण गर्ग हैं। इसका प्रकाशन संगीत कार्यालय हाथरस द्वारा हुआ है। संगीत विशारद में भारतीय संगीत की उत्पत्ति, उत्तर भारतीय संगीत का इतिहास, ध्वनि विज्ञान, संगीत में सप्तक का विकास, गायन में मुख्य घराने, कत्थक नृत्य के घराने, प्रथम वर्ष से अष्टम वर्ष तक के 144 रागों का वर्णन, परिचय संगीतकारों का संक्षिप्त परिचय, वाद्ययंत्र परिचय, वाद्यों के प्रकार और संगीत विषय से संबंधित निबंध आदि। इस पुस्तक में बहुत कुछ है जो शास्त्रात्मक अध्ययन के लिए संगीत के विद्यार्थियों के लिए बहुत लाभकारी है।

राग विशारद (भाग -2)

राग विशारद (भाग- 2) के लेखक डॉ लक्ष्मीनारायण गर्ग हैं। इसका प्रकाशन भी संगीत कार्यालय हाथरस द्वारा हुआ है। इस पुस्तक में प्रथम वर्ष से अष्टम वर्ष तक के राग हैं। इसमें 127 रागों में 672 संगीत बंदिशें, राग विवरण तथा स्वर विस्तार सहित दिया गया है। पुस्तक के अंत में शास्त्रीय रागों पर आधारित 335 फिल्म गीतों की सूची दी गई है।

मुक्ता वार्ष्णेय
गाजियाबाद
उत्तर प्रदेश

लाइब्रेरी का वो दरवाजा

हेमा शर्मा
जयपुर

यह एक लाइब्रेरी है !!! हाँ यही तो है जिसने मुझे स्वतंत्रता का प्रथम पाठ पढाया था, तब जब मैंने अपनी पसंद की पुस्तक को खुद चुना और अलमारी से पढने के लिये उठाया था। इन किताबों से ही तो मैंने मनुष्य की सभ्यता को जाना था और हम पहले बंदर जैसे दिखते थे ये माना था। यहीं मैंने जाना था कि कैसे आदिमानव आज का इंसान बना, कैसे सारे अविष्कार हुए, कैसे दो पत्थरों ने पहली बार आग से मानव का परिचय कराया, कैसे पहली बार मानव ने हवाई जहाज उड़ाया, किसने रेल बनाई किसने ड्रोन बनाया, किसने कंप्यूटर बनाया और कैसे हम आज सूचना तकनीकी के युग में पहुंचे।

इन्ही में सवार हो मैंने ब्रह्माण्ड की यात्रा की है। हमारे सौर मंडल की सैर की है। इन्ही से मैंने जाना था कि पृथ्वी संतरे की तरह गोल हैं और एक कटोरी में रखी हुई लगातार घूम रही है और ये भी कि पृथ्वी सूर्य की ओर चंद्रमा पृथ्वी के चारों ओर लगातार गोल गोल घूम रहा है। एक किताब ने ही मुझे चाँद पर चरखा चला रही बुढ़िया का रहस्य बताया था और सूरज के सात घोड़ों से मेरा परिचय कराया था।

इस दरवाजे के अंदर कहानियों का एक समुद्र उफनता है। जिसमें अनगिनत किरदारों का समुदाय रहता है। इन्हीं कहानियों ने मुझे बताया कि किस तरह राजा की बेटी को राक्षस उठाकर ले गया था और बादलों के घोडे पे सवार राजकुमार राक्षस को मारकर उसे वापस लेकर आया था। इन्ही कहानियों ने मुझे परियों की दुनिया में चाँद पर झूला झुलाया था और नीली परी, लाल परी, सोन परी और परियों की रानी से मुझे मिलाया था। कहानियों के इसी संसार ने मेरा परिचय सिंड्रेलाग रिपुंजलग स्नो वाइट और उसके सात बौनेग स्लीपिंग ब्यूटी और लिटिल रेड राइडिंग हुड जैसे विदेशी मित्रों से कराया था। यहीं पर मुझे पिंकी बबलू, चाचा चौधरी, चाची और साबू ने गुदगुदाया था। राजन और इकबाल ने मेरे अंदर का जासूस जगाया था। यहीं चंपक, नंदन और चंदामामा पढ़ते पढ़ते बालावस्था से किशोरावस्था में कदम रखे हैं मैंने।

इन किताबों से मैंने जाना था कि किस तरह वास्को डी गामा भारत आया और किस तरह अंग्रेजों ने हमें 200 साल तक सताया और ये भी कि उन्हें हिन्दुस्तान से वापस भेजने की लिए 1857 में मुगल बादशाह बहादुर शाह ज़फर से शुरू हुआ आंदोलन 1947 में महात्मा गांधी पर आकर खत्म हुआ था जब हमने अपना तिरंगा लाल किले पर फहराया था। यहीं पर जाना मैंने कि आजादी की इस लड़ाई में अनगिनत वीरों ने अपने प्राण गवाएं थे। कैसे कैसे बलिदान लोगों ने दिए थे, क्यूंकि किसी देश वह भी भारत जैसे देश की आजादी किसी एक के बलबूते की बात नहीं थी।

इसी सन्दर्भ में रानी लक्ष्मी बाई तात्या टोपे, भगत सिंह, सुभाष चन्द्र बोस, चन्द्र शेखर आज़ाद सरदार वल्लभभाई पटेल, कस्तूरबा गाँधी, विजयलक्ष्मी पंडित, अरुणा आसफ अली जैसे और न जाने कितने अनगिनत असाधारण नामों को जाना है मैंने। इन्हीं ने विज्ञान क्या होता है सर्वप्रथम बताया मुझे भाषा का ज्ञान कराया मुझे, गणित के खेल समझाए मुझे, इतिहास के बारे में बताया मुझे, महान व्यक्तियों की जीवनियों से परिचित कराया मुझे, प्रकृति से जोड़ा मुझे और क्या क्या में तुम्हें बताऊँ जो इसने बताया मुझे।

वो सभी कहानियां जिनसे मैं घर पर नहीं मिल सकती थी किताबों ने ही मुझसे मिलायी हैं, वो सभी कविताऐं जो मैं घर पर नहीं सुन सकती थी इसने ही गाकर सुनाई हैं, वो सभी गीत जो माँ न गा सकी, इसने ही मेरे लिये गुनगुनाये हैं।

पुस्तकालय ने मुझे सहयोग सहभागिता सहकारिता सहायता, सहिष्णुता, सहनशीलता का पाठ पढाया और दया प्रेम करूणा मित्रता से मेरा परिचय कराया।

आप भी लाइब्रेरी के इस दरवाजे की तरफ एक कदम बढ़ाएं यकीन मानिए आपको वो दुनिया मिलेगी जिसका ख्वाब आपने न जाने कितनी बार देखा होगा। सच में किताबों से मिलना हर बार एक सुखद अहसास होता है।

जिन्हें जुर्म-ए-इश्क़ पे नाज़ था

पंकज पाराशर
वरिष्ठ आलोचक

हिंदी में फिलहाल जो माहौल है उसमें जो लेखक हिंदी भाषा-साहित्य की परंपरा, व्याकरण, मुहावरे और भाषिक प्रकृति तक पर अधिकार नहीं रखता, वह कुशल प्रबंधन और 'माहौल' बनाने की कला के कारण पत्र-पत्रिकाओं के पृष्ठों से लेकर आलोचकों की सृजन-परिक्रमा तक में मुसलसल मौजूद होता है। यह अकारण नहीं है कि इस तुमुल कोलाहल में अनेक बार बेहतरीन रचनाएँ अचर्चित और अलक्षित रह जाती हैं! कुछ लेखक प्रिय आलोचक अपने मुखारविंद से जब भी कुछ उवाचते हैं, तो अपनी पसंद के महज दो-चार रचनाकारों तक सीमित रहकर 'विषय-कीर्तन' कर लेते हैं! इसलिए अनेक क्षमतावान आलोचक आज 'देखत तव रचना विचित्र अति, समुझि मनहिं मन रहिये' की स्थिति में हैं। 'नई कहानी' के दौर में कुछ लेखकों ने जिस तरह आलोचना में भी हाथ आजमाया और एक-दूसरे की पीठ खुजाई थी, उसी तर्ज पर पिछले कुछ सालों में कुछ लेखक प्रिय समीक्षकों और अधिकांश लेखकों नें 'उष्ट्राणां विवाहेषु, गीतं गायन्ति गर्दभा:' से अद्भुत समां बाँध दिया है!

ऐसे माहौल में यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि मध्य प्रदेश के सीहोर-जैसी छोटी जगह में रहकर एक ऐसा कथाकार भी है, जो निरंतर लिख रहा है और अपनी हर रचना में अपनी ही भाषा, शैली और शिल्प की हदों को तोड़ कर कुछ नया और अनूठा रच रहा है। फैज़ अहमद फैज़ की एक ग़ज़ल का शेर है, 'न रहा जुनून-ए-रुख-ए-वफा ये रसन ये दार करोगे क्या/जिन्हें जुर्म-ए-इश्क पे नाज था वो गुनाहगार चले गए।' पंकज सुबीर ने अपने उपन्यास के शीर्षक के लिए फैज़ साहब के इस शेर को चुना है, 'जिन्हें जुर्म-ए-इश्क पे नाज था'। कल इस उपन्यास को पढ़ते हुए बारहा 'कितने पाकिस्तान', 'आखिरी कलाम', 'तमस' और उर्दू के कथाकार इंतजार हुसैन के उपन्यास 'बस्ती' की याद आती रही। हमारे समय के लेखक और शास्ता जिन-जिन सवालों से टकराने से बचते हैं और

'पोलिटिकली इनकरेक्ट' होने की आशंका से कतरा कर निकल जाते हैं, उन तमाम सवालों से पंकज सुबीर इस उपन्यास में जूझते हैं। अपने अकाट्य तर्कों से पाठकों को कायल करते हैं! सांप्रदायिकता की थीम पर लिखते समय हिंदी के लेखक जिस 'ट्रैप' में प्राय: फँस जाते हैं, जिस चीज को डील करते समय वे स्टीरियोटाइप्ड हो जाते हैं, उसे सुबीर अपनी कलात्मकता से बहुत बेहतरीन ढंग से 'डील' करते हैं। जिन बातों को कहने के लिए कमलेश्वर को अदीब-ए-आलिया की अदालत लगानी पड़ी, दूधनाथ सिंह को तत्सत पाण्डेय जैसे सनकी पात्र को रखना पड़ा (फिर भी असफल रहे), उससे आगे की बातें कहने के लिए सुबीर ने सिर्फ सहजता और सरलता की संघनित किस्सागोई को चुना। बस इतना और कहूँगा कि इस टिप्पणी में मैंने जिन उपन्यासों ('कितने पाकिस्तान', 'आखिरी कलाम', 'तमस' और 'बस्ती') का जिक्र किया है, 'जिन्हें जुर्म-ए-इश्क़ पे नाज़ था' उससे कहीं आगे का उपन्यास है!

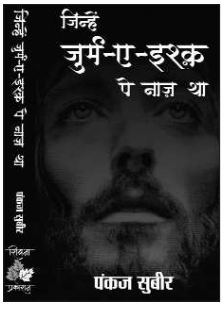

'माही संदेश' में विज्ञापन दें

एक स्वाभाविक प्रश्न जो मन में आता है कि आप 'माही संदेश' मासिक पत्रिका में विज्ञापन क्यों दें.....तो इसके लिए आपके पास बहुत से कारण हैं..जैसे,

वर्तमान में युवा पीढ़ी साहित्य की ओर बहुत तेजी से आकर्षित हो रही है और 'माही संदेश' पत्रिका में साहित्य, समाज और जीवन के विभिन्न पक्षों पर सर्वाधिक बल दिया गया है और इसका प्रकाशन अनुभवी साहित्यिक व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा है जिससे युवा पीढ़ी तक आप सहज ही पहुंच सकते हैं।

हमारे साथ जुड़े विभिन्न सामाजिक संगठन एवं संस्थाओं, सरकारी कार्यालयों में 'माही संदेश' मासिक पत्रिका निरंतर पहुंच रही है। जिससे आपका विज्ञापन हर आयुवर्ग के व्यक्ति तक पहुंच पायेगा।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका गुणवत्ता युक्त पाठ्य सामग्री को समेटे हुए हैं जिससे इसका एक व्यापक पाठक वर्ग है।

विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के विशेष कवरेज के कारण निश्चित रूप से हमारे साथ आप भी शीघ्रता से निरन्तर आगे बढ़ेंगे ऐसा हमारा प्रयास और विश्वास है।

खोखले दावों के विपरीत वास्तविकता के धरातल पर हम आपका हमारे साथ जुड़ने पर स्वागत करते हैं।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका विज्ञापन दर

पत्रिका का कवर पृष्ठ	₹ 50,000
सामने के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
पीछे का कवर रंगीन	₹ 40,000
पीछे के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम पृष्ठ	₹ 6,100
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम आधा पृष्ठ	₹ 3,100

संपादक
माही सन्देश
खाता संख्या
37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखा: कनक विहार, हीरापुरा, जयपुर
पेटीएम-9887409303
दूरभाष- 9887409303

मैं भेड़ नहीं बन सकता

मेरा रास्ता मेरा होगा

नीरज गोस्वामी

रोहित कृष्ण नंदन

***नीरज** गोस्वामी जी का नाम काफी सुना था। कुछ माह पहले योगिता शर्मा जी जो कि बेहतरीन गज़ल लिखती हैं, उनके घर आयोजित हुई काव्य महफिल में पहली बार नीरज गोस्वामी जी से रूबरू होने का अवसर मिला। सुनने-सुनाने के दौर के साथ बात हुई दुबारा मिलने की। लेकिन समय बहुत तेजी से भागता है, इसी बीच कई महीने निकल गए फिर माही संदेश के 'चलें किताबों की ओर' विशेषांक पर काम आरंभ हुआ। किताबें जिस शख्स के लिए जीवन हों उस शख्स से मिले बिना भला कभी रहा जाता है क्या? माही संदेश के सहयोगी साथी अरविंद शर्मा के साथ नीरज गोस्वामी जी से मुलाकात हुई।*

नीरज गोस्वामी जी का जन्म 14 अगस्त 1950 को पठानकोट में हुआ। इससे पहले इनका परिवार 1947 के विभाजन से पहले पाकिस्तान के लाहौर शहर के पास गुजरांवाला गांव में रहता था। कवि मन वाले नीरज पेशे से इंजीनियर हैं और विभिन्न संस्थाओं में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। हाल ही पिछले वर्ष टाटा स्टील कंपनी में वाइस प्रसिडेंट के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। पढ़ने, लिखने और नाटकों में अभिनय करने के शौकीन नीरज इंटरनेट तथा ब्लॉग जगत के सबसे लोकप्रिय शायरों में से एक हैं। खास बात यह है कि नीरज अपने ब्लॉग पर नियमित रूप से गज़लों की पुस्तकों की समीक्षा तथा यात्रा संस्मरण बड़ी ही रोचक शैली में लिखते हैं।

जीवन में किताबें पढ़ना बहुत जरूरी है...

किताबों के बारे में जिक्र करते हुए नीरज कहते हैं कि पढ़ना बहुत जरूरी है। किताब हमें जीवन से रूबरू कराती हैं, इनसे अच्छा दोस्त दूसरा कोई हो ही नहीं सकता। किताबें कभी मरेंगी नहीं। जब हम किताब पढ़ते हैं जो कागज की खुशबू पढ़ते वक्त आती है उस अनमोल अहसास का जादू मत पूछिये कितना प्रभावी होता है। युवाओं के लिए नीरज जी कहते हैं कि कभी भी अपने आपको कम नहीं आंकें, आप विधाता की सर्वश्रेष्ठ कृति हैं। कभी भी किसी की नकल न करें खुद अपना रास्ता बनाएं, मेहनत करते रहें, मंजिल जरूर मिलेगी। मैंने जीवन से यही मूलमंत्र सीखा है कि भेड़ें मत बनिए अपना रास्ता आप खुद बनाइए।

'डाली मोगरे की' ग़ज़ल संग्रह से एक ग़ज़ल

मिलेंगी तब हमें सच्ची दुआएँ
किसी के साथ जब आँसू बहाएँ
बहुत बातें छुपी हैं दिल में अपने
कभी तुम पास बैठो तो सुनाएँ
फ़क़ीरों का नहीं घर-बार होता
कहाँ इक गाँव ठहरी हैं हवाएँ
हमेशा जीतता है सच ही आख़िर
बुज़ुर्गों से सुनी ऐसी कथाएँ

बना लें दोस्त चाहे आप जितने
मगर हरगिज़ न उनको आज़माएँ
बिछुड़कर घर से हम भटके हैं, जैसे
गिरे पत्ते शजर से धूल खाएँ
लगा गलने ये चमड़े का लबादा
चलो बदलें, रफ़ू कब तक कराएँ
अजब रिश्ता है अपना तुमसे 'नीरज'
करें जब याद तुमको मुस्कुराएँ।

v **नीरज गोस्वामी** v

सीखना सतत प्रक्रिया है

जहां भी जैसे भी पढ़ने का मौका मिले तुरंत किताबों को पढ़िए, अभी छांटने का काम मत करिए कि यह किताब पढ़ने लायक है या नहीं। जो भी आप पढ़ेंगे वह आपको कुछ सीख ही देगा।, क्योंकि सीखना सतत प्रक्रिया है। नीरज जी ने गज़लों की तकरीबन 500 से ज्यादा किताबें पढ़ी हैं। जिनमें से इन्होंने तकरीबन 203 किताबों पर लिखा है। यह 10 से 12 वर्ष के सतत अध्ययन का नतीजा है।

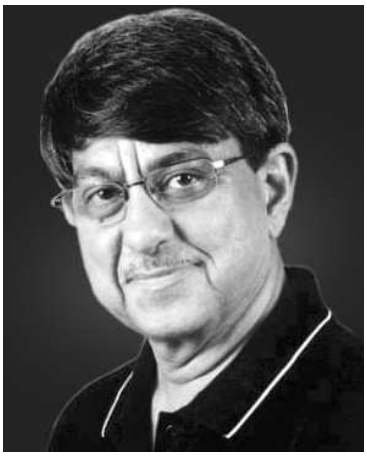

अभी तक प्रकाशित पुस्तकें

'डाली मोगरे की' नीरज गोस्वामी का प्रथम गज़ल संग्रह है, जिसका प्रकाशन वर्ष 2013 में किया गया था। जिसके अभी तक छह संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इसके बाद वर्ष 2016 में '101 किताब गज़लों की' पुस्तक समीक्षा संग्रह प्रकाशित हुआ। इसके बाद '51 किताब गज़लों की' भाग एक तथा '51 किताब गज़लों की' भाग दो प्रकाशित हुआ। 2017 में 'यायावरी यादों की' शिवना प्रकाशन से ही प्रकाशित हुआ। आपको यह बात जानकर आश्चर्य होगा कि नीरज गोस्वामी जी ने महज वर्ष 2006 में ही लिखना आरंभ किया। आप जब इनकी ग़जल और कलम को पढ़ेंगे तो लगेगा आप रूह से बातें कर रहे हैं। नीरज जी कहते हैं कि पढ़ना बहुत जरूरी है, मैं गिनती करके नहीं बता सकता मैंने अब तक कितनी किताबें पढ़ी हैं,लेकिन इतना कह सकता हूं कि मैंने पढ़ा बहुत है और ये पढ़ना अभी भी निरंतर जारी है।

विशेष

माही संदेश में अब अक्टूबर अंक से नियमित 'नीरज गोस्वामी की कलम' से स्तंभ प्रकाशित किया जाएगा।

जीवन का पर्यायवाची शब्द है 'किताब'

किताब, जी हाँ किताब को अगर जीवन का पर्यायवाची शब्द कहा जाए तो कोई हैरत की बात नहीं, क्योंकि एक सही पुस्तक का चुनाव हमें आदमी से इंसान बनाने का माद्दा रखता है।

अच्छी पुस्तकें पढ़ कर हम सहजता से अपने लक्ष्यों की प्राप्ति कर सकते हैं, जहां तक मैं अपनी बात करूं तो जीवन में जितना भी कुछ सीखा है या जाना है उनमें साहित्य का अच्छे साहित्य का) बहुत बड़ा योगदान रहा है। जीवन में किन्हीं निजी कठनाइयों के चलते जब मन में नकारात्मक भाव आने लगे और सब हाथ से छूटता सा और व्यर्थ सा लगने लगा, तब किसी ने मेरे हाथ में एक पुस्तक रख दी और कहा 'इसे जरूर पढ़ना'।

वो किताब पढ़ने के बाद एक चमत्कार हुआ, उस किताब ने ज़िन्दगी के प्रति मेरे नज़रिए को बदल कर रख दिया और वो किताब थी साहिर लुधयानवी की 'तल्खियाँ'। इस किताब ने सिखाया कि जीवन में अपने निजी दुखों को रोने से पहले समाज के तबके पे नज़र डालो जो शुरू से आज तक उपेक्षित है, ग़रीबी, भुखमरी से मरते लोग, लुटती अस्मतें, जात पात, ऊंच नीच। इन सबको नज़दीक से देखने आपको ज्ञात होगा कि आपका दुख कितना छोटा है और जीवन मे आपके आने का मकसद क्या है।

किताब में उनकी कई नज़में और गज़लें ऐसी हैं जिन्हें पढ़ कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं और हम सोचने पर मजबूर हो जाते हैं। साहिर हमें बहुत जज़बाती कर देते हैं, उनकी नज़्म 'शिकस्ते-जिन्दां' हो या 'मताये-गैर, 'एक वाकया' हो या 'आवाज़े-आदम' सभी एक से एक उम्दा हैं।

'गांधी हो गालिब' मेरी पसंदीदा नज़्म है।

अगर आप एक संवेदनशील पाठक हैं और समाज के प्रति चिंतित हैं तो ये किताब आपके लिए है। मैं भी यही कहूंगा जरूर पढ़ें साहिर की 'तल्खियाँ'। और भी बहुत लिखा जा सकता है इस किताब के बारे में, पर फिलहाल उनकी एक नज़्म 'ये किसका लहू है' का एक अंश पेश है।

'हम ठान चुके हैं अब जी में,
हर ज़ालिम से टकराएंगे।
तुम समझौते की आस रखो,
हम आगे बढ़ते जाएंगे।
हर मंज़िले आज़ादी की क़सम,
हर मंज़िल पे दोहराएंगे।

सन्तोष पुरस्वानी 'सन्त'
जयपुर

जीवन का महत्व बताती हैं किताबें

किताबें सम्पूर्ण मनोरंजन हैं, बीच में कोई विज्ञापन नहीं आता, ना बैटरी कम होती है और एक-एक रूपये का घंटों तक आनंद। रोज एक किताब पढ़ने का नियम बना लीजिये आपको मजा आयेगा। किताब वो है जो आपके विचारों में, सोच में क्रांतिकारी परिवर्तन कर दे। किताबें हमें जीवन का महत्व बताती हैं यदि हमारा उनके बारे में चुनाव सही है। मैंने कई किताबें पढ़ी हैं और मेरा मानना है कि अगर आपने किताबों को दोस्त बनाया तो वो हमेशा आपको सही रास्ते पर लेकर चलेगी । मैंने बहुत सारे लेखकों की किताबें पढ़ी हैं जिसमें प्रमुख रूप से शिव खेड़ा, रॉबिन शर्मा, डेल कार्नेगी, नेपोलियन हिल, पाओलो कोएलो, रॉबर्ट कियोसाकी और सबसे ज्यादा मेरे लिए महत्वपूर्ण ओशो की पुस्तकें ।

अगर मैं ओशो के बारे में बात करूं तो शब्दहीन हूं क्योंकि वो किताबों की दुनिया में महासागर हैं । ओशो ने खुद ने कोई पुस्तक नहीं लिखी है, ये सब उनके द्वारा दिये गए प्रवचनों का संग्रह है जो बाद में लिखा गया है । उनकी किताब ' कृष्ण स्मृति और गीता दर्शन' ये दो किताबें ओशो द्वारा कृष्ण के बहुआयामी व्यक्तित्व पर दी गई 21 वार्ताओं और नवसंन्यास पर दिये गये विशेष प्रवचनों का खास संकलन है। 'गीता दर्शन' नाम से उनकी इस प्रवचनमाला को सुनना या पढ़ना ऐसा है कि मानो महाभारत के युद्ध में स्वयं खड़े होकर कृष्ण को सुनना। कृष्ण और गीता को समझना हो तो इससे बेहतर कोई दुनिया की प्रवचनमाला नहीं हो सकती। इसी शृंखला में ओशो की एक और किताब है जो हमें पढ़नी चाहिए 'देख कबीरा रोया' ओशो ने भारतीय रहस्यदर्शियों और भारत के अतीत व भविष्य पर एक प्रवचनमाला की शुरुआत की थी, उन्हीं प्रवचनमालाओं में से कुछ को संग्रह करके यह किताब बनी। इसमें सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं पर प्रश्नोत्तर सहित 22 प्रवचन संकलित हैं। इसमें भारत के जलते प्रश्नों के समाधान बताये गए हैं। प्रत्येक भारतीय को यह किताब पढ़नी चाहिए यदि वह वाकई में भारत को जानना चाहते हैं। कहते हैं कि शब्दों में हमें बदलने की शक्ति होती है और ऐसे शब्द हमें अच्छी किताबों में मिलते हैं।

अदिति चौधरी
जयपुर

सच्ची मित्र हैं 'किताबें'

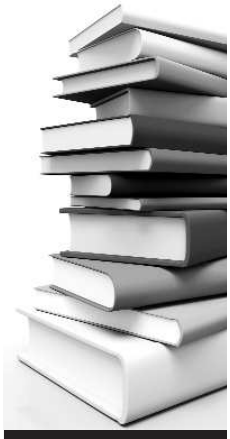

जो मन को भी समझाती हैं, दूर उलझन को कर जाती हैं।
मन के विचार सुलझा कर के...जीवन में रंग भर जाती हैं।

रंग बिरंगे पन्नों से वो सबका मन मोह लेती हैं
बेजुबान किताबें, गूंगों को जुबान दे देती हैं।

पढ़ना ही काफी नहीं इनके पथ पे भी चलिए जी
सौ दोस्तों के काम को आप इससे ही हल करिए जी

सपनों की क्या बात करूं मेरे आसमान के सपने हैं
किताबों के जरिए ही साथी ये सारे सारे अपने हैं

तुम एक बार पढ़ लोगे गर जीवन फिर ये अच्छा होगा
जो मन की बात बाहर लाए बस वो कवि मन सच्चा होगा

क्या मोल बताऊं इनका मैं क्या काबिल हूं कहने के
जीवन तो वह जीवन है जिसका मतलब हो बहने में।

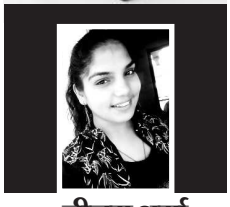

नीलम शर्मा
मेरठ

प्रेरणा का भंडार हैं किताबें

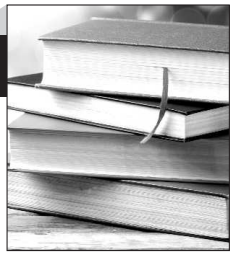

किताबें प्रेरणा का भंडार हैं।
किताबें विकास की रफ्तार हैं।।
किताबें हैं प्रचार का साधन।
किताबें ही चरित्र का निर्माण है।।
किताबें ही ज्ञान की प्राप्ति का प्रशस्त मार्ग है।
किताबें ही सत्संगति और स्वाध्याय का आधार हैं।।
किताबें ही मानव की क्षमता और सम्मान का सार हैं।
किताबें ही मानव के ज्ञान के प्रकाश का आविष्कार हैं।।
किताबों में ही दार्शनिक, चिंतक और साहित्यकार हैं।
किताबों में ही लोकजीवन का सार है।।
किताबों में ही सच्चा मित्र और अच्छे विचार हैं।
किताबें ही साहस और धैर्य की मझदार हैं।।
किताबों में वेद, शास्त्र और रामायण का गान है।
किताबों में भागवतगीता, ईसा और कुरान हैं।।
किताबों में है संस्कृति और इतिहास की विरासत।
किताबों में ही एकता और अखंडता का ज्ञान है।।
किताबें ही नित नई दिशा प्रदान करती हैं।
किताबें ही युवा कर्णधारों की आवाज़ बनती हैं।।
किताबें ही प्रत्येक काल का इतिहास बुनती हैं।।
किताबें ही सशक्त राष्ट्र का निर्माण करती हैं।।

रुचि रस्तोगी
गाजियाबाद

यूं होता तो क्या होता

दिले नादाँ तुझे हुआ क्या है।
आख़िर इस दर्द की दवा क्या है।।

मेरे ख़याल में इस दर्द की दवा यही है कि आप मिर्ज़ा असद-उल्लाह बेग ख़ां उर्फ 'ग़ालिब' को पढ़िये। वैसे गालिब को पढ़ने को एक ज़िन्दगी कम है। अभी हाल ही मैंने 'मिर्ज़ा गाालिब:एक स्वानही मंज़रनामा' किताब पढ़ी। गुलज़ार साहब ने अपनी लेखनी के जरिये चाँद और मिर्ज़ा गालिब को जितने करीब से देखा है शायद किसी ने नहीं। इसे पढ़कर आपको यूँ लगेगा कि ख्वाब में गालिब से मुलाकात हुई हो और ये हसीं ख्वाब जेहन में जज़्ब हो जाएगा।

गुलज़ार साहब की लिखी यह किताब - गली क़ासिम जान के किस्से से शुरू होती है मिर्ज़ा गालिब की अपनी बेगम उमराव से नोंक झोंक, हाज़िरजवाबी महफ़िलों मुशायरों में उम्दा शायरी, नवाब जान की मुहब्बत- 'इश्क पर जोर नहीं है यह वो आतिश गालिब- कि लगाए ना लगे और बुझाये ना बने', बेऔलाद होने के गम और फाकाकशी के दौर में भी कलंदराना बसर, पेंशन के लिए कलकत्ता तक उनका सफ़र, बादशाह बहादुरशाह ज़फर के दरबार में 'नजमुद्दौला दबीरुमुल्क निजामे जंग' का खिताब, ब्रिटिश हुकूमत के तले कुचलती मुगल सल्तनत वगैरह वाकयात को समेटे हुए है।

गालिब के लिखे 'दीवान-ए-गालिब' का कई ज़बानों में तर्जुमा शाया हुआ है। *हुई मुद्दत कि 'गालिब' मर गया पर याद आता है, वो हर इक बात पर कहना कि यूँ होता तो क्या होता.....*

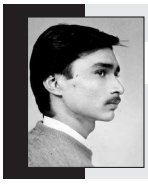

एस.बी. आहत
जयपुर

जीवन में अटल जी की पुस्तक से प्रेरणा

डॉ. हरिसिंह गोदारा

गीता में कहा गया है- ज्ञान के बिना मुक्ति सम्भव नहीं है। ज्ञान की प्राप्ति के मुख्यत: दो मार्ग है- 'सत्संगति' और 'स्वाध्याय'। तुलसीदासजी ने सत्संगति की महिमा बताते हुए कहा है-'बिन सत्संग विवेक न होई' परन्तु सत्संगति की प्राप्ति रामकृपा पर निर्भर है। यदि भगवान की कृपा होगी तो व्यक्ति को सत्संगति मिलेगी।

परन्तु पुस्तकें तो सर्वत्र सहजता से उपलब्ध हो जाती हैं। ज्ञान का महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं-पुस्तकें। आज संसार की प्राचीनतम पुस्तकें भी हमें उपलब्ध हैं। प्रत्येक भाषा में विपुल साहित्य उपलब्ध है। प्रत्येक मनुष्य अपनी क्षमता के अनुसार अध्ययन करके अपने ज्ञान क्षितिज का विस्तार कर सकता है। एक युग था जब पुस्तकों का प्रकाशन सम्भव नहीं था। ज्ञान का माध्यम वाणी ही थी। अधिक से अधिक भोजपत्र उपलब्ध थे। जिन पर रचनाएं लिपिबद्ध की जाती थीं। परन्तु आज के युग में छापेखाने का आविष्कार होने के बाद हमें ऋषि-मुनियों, दार्शनिकों, चिन्तकों और साहित्यकारों के विचार मुद्रित रूप में उपलब्ध हैं। अत: हम उनका अध्ययन करके अपने जीवन को सफल बना सकते हैं।

कुसंगति से बुरा रोग नहीं है। इसीलिए कहा गया है- better alone than in a bad company. अर्थात् कुसंगति से एकान्त कहीं ज्यादा उत्तम है। पुस्तकें एकान्त की सहचारी हैं। वे हमारी मित्र हैं जो बदले में हम से कुछ नहीं चाहती। वे इस लोक का जीवन सुधारने और परलोक का जीवन संवारने की शिक्षा देती हैं। वे साहस और धैर्य प्रदान करती हैं। अन्धकार में हमारा मार्ग

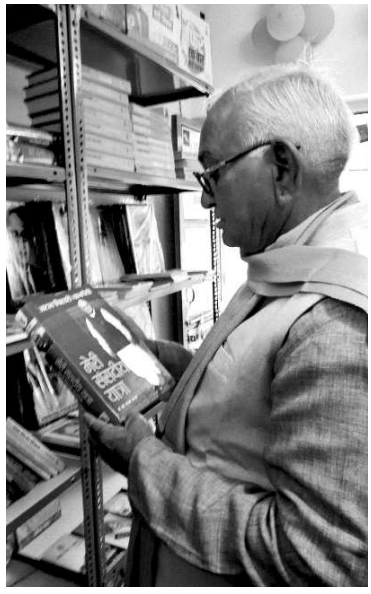

दर्शन कराती हैं। अच्छा साहित्य हमें अमृत की तरह प्राण शक्ति देता है। पुस्तकों के पढ़ने से जो आनन्द मिलता वह ब्रह्मानंद है। जीवन में शिक्षक होने का सौभाग्य प्राप्त रहा, एक बार जब मुझे राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित किया गया, तब तत्कालीन प्रधानमन्त्री अटल जी से मुलाकात हुई, चर्चा में शामिल हुआ, अटल जी के जीवन दर्शन को समझने का क्रम शुरू हुआ, मेरी संसदीय यात्रा पुस्तक को पढ़ने को दिनचर्या में जोड़ दिया, बाद में सार्वजनिक जीवन में सरपंच का दायित्व आया तो अटल जी की पुस्तक, कविता संग्रह को प्रेरणा मानकर पढ़ने की अभिरुचि पैदा की तो जीवन बदल गया, आज के सत्ता की चाहत पर आधारित राजनीति के मध्य अटल बिहारी वाजपेयी, जो राजनीति नहीं, 'राष्ट्रनीति' करते थे। उनकी सोच हमें प्रेरणा देती है।

अटल बिहारी वाजपेयी का नाम राजनीति में किसी एक व्यक्ति विशेष का नाम नहीं बल्कि यह नाम है, एक संपूर्ण विचारधारा का। वह विचारधारा जिसमें विश्वास है, सत्य है, शिष्टाचार है, राष्ट्रप्रेम है और अपने विरोधियों के लिए सम्मान भी है। राजनीतिक जमीन पर अटल जी ने जब-जब मोहब्बत का राग छेड़ा तो क्या अपने और क्या राजनीतिक विरोधी सभी ने सिर्फ शांत होकर उनको सुना। अटल बिहारी वाजपेयी के किरदार में प्रेरणा, ईमानदारी, शांति, विश्वास, सम्मान, शौर्य, स्वाभिमान सभी कुछ समाया हुआ था। अटल जी एक ऐसे व्यक्ति थे, जो राजनीति नहीं बल्कि 'राष्ट्रनीति' में विश्वास रखते थे। उन्होंने एक बार कहा था कि आपका भाषण आपके ज्ञान को उजागर करता है तो आपका मौन आपके विवेक को दर्शाता है। उनकी वाणी सदैव विवेक और संयम का ध्यान रखती थी। अटल जी की प्रेरणा से ही पिछले साल से शेखावाटी अंचल में वैकल्पिक राजनीति का अभियान चल रखा है, राजनीति केवल सत्ता का माध्यम नहीं, यह अटल जी से सीख कर मै पर्यावरण, सामाजिक समरसता, शिक्षा, व स्वास्थ्य आदि विषयों को लेकर काम करता हुं। साथ ही में गांव, किसान, गरीब के साथ साथ सामाजिक रूप कमजोर तबके की आवाज को समझने के लिए बाबा साहेब अम्बेडकर, दीनदयाल उपाध्याय व चौधरी चरण सिंह के जीवन दर्शन व पुस्तकों को नियमित पढ़ता हूं। अंत में मैं कहना चाहता हूं कि एक पेन, एक कलम, एक बालक, व एक शिक्षक समाज व राष्ट्रीय जीवन को बदल सकता है। आगामी दिनों में मेरी मां जिनकी प्रेरणा से मैं शिक्षक बना, उनकी स्मृति संचालित केजीआई संस्थान के द्वारा पुस्तकालय का संचालन करेंगे, पुस्तक संग्रह जारी है, लगभग पांच हजार पुस्तकों के पुस्तकालय की कल्पना है।

व्रजेश्वरी के प्रकाशन

1. आजादी का राणा - डॉ॰ मदन लाल शर्मा (कविता-संकलन)
राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत कविताओं का संग्रह। हिन्दी विषयान्तर्गत स्कूलों तथा कॉलेजों में भी विशेष रूप से पाठनीय रचनाएं।
2. साकेत का विशिष्ट अध्ययन - डॉ॰ रश्मि शर्मा
सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में साकेत का विशिष्ट विश्लेषणात्मक अध्ययन। विश्वविद्यालयों के छात्रों के लिए परमोपयोगी समीक्षात्मक ग्रंथ।
3. श्रीमद्भागवत तथा सूरसागर में सांस्कृतिक चेतना - डॉ॰ रश्मि शर्मा
'भागवत' और सूरसागर की सांस्कृतिक गरिमा का आकलन। 'भागवत' तथा सूरसागर के अध्येताओं के लिए परमोपयोगी ग्रंथ।
4. रामचन्द्रिका में सांस्कृतिक चेतना - डॉ॰ प्रेम प्रकाश शर्मा
रामचन्द्रिका की सांस्कृतिक गरिमा का मूल्यांकन। रामचन्द्रिका के अध्ययनार्थ परमोपयोगी समीक्षात्मक ग्रंथ।
5. हिन्दी-काव्यप्रकाश - डॉ॰ मदन लाल शर्मा
6. हिन्दी-कविता में संस्कृति, धर्म और दर्शन—डॉ॰ मदनलाल शर्मा
संस्कृति, इतिहास, दर्शन तथा पुरातत्त्व आदि के विश्वविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा भारतीय संस्कृति, के आराधक पाठकों के लिए उपयोगी कृति।
7. लोकोक्तियां और मुहावरे—डॉ॰ मदनलाल शर्मा
लोक-साहित्य, लोकोक्तियों तथा मुहावरों के अध्येताओं के लिए पूर्णतया उपयोगी कृति।
8. प्रेमचन्द की कहानियों में सांस्कृतिक चेतना—डॉ॰ महेश चन्द
प्रेमचन्द की कहानियों में निहित सांस्कृतिक वैशिष्ट्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
9. पृथ्वीराज रासो और पद्मावती समय (समीक्षा-मूलपाठ तथा व्याख्या)
लेखक—डॉ॰ मदन लाल शर्मा एवम् डॉ॰ गीता कौशिक (एम.ए. हिन्दी के विद्यार्थियों के लिये परम उपयोगी कृति)
10. पृथ्वीराज रासो और कयमास-वध (समीक्षा-मूलपाठ तथा व्याख्या)
लेखक—डॉ॰ मदन लाल शर्मा एवम् डॉ॰ गीता कौशिक (एम.ए. हिन्दी के विद्यार्थियों के लिये परम उपयोगी कृति)
11. वाल्मीकीय रामायण और रामचरितमानस में राजनीति, विज्ञान और कला - डॉ॰ गीता कौशिक
12. विजय पर्व (महाकाव्य) - डॉ॰ मदन लाल शर्मा
13. वीर-रत्नम् (वीर महाकाव्य) - डॉ॰ मदन लाल शर्मा
14. नारी-रत्नम् (नारी महाकाव्य) - डॉ॰ मदन लाल शर्मा
15. ऋषि-रत्नम् (मुनि महाकाव्य) - डॉ॰ मदन लाल शर्मा
16. बाल-रत्नम् (बाल महाकाव्य) भाग-1 व 2 - डॉ॰ मदन लाल शर्मा
17. कहानी रत्नम् भाग- 1, 2 व 3 - डॉ॰ मदन लाल शर्मा
18. लोकोक्ति - विमर्श - डॉ॰ मदन लाल शर्मा

उपन्यास

1. दहकते-अंगारे (महाकाव्यात्मक उपन्यास)
2. मनु-वंश (महाकाव्यात्मक उपन्यास)
3. उड़ती चील का अण्डा (महाकाव्यात्मक उपन्यास)
4. हींस का हंस (महाकाव्यात्मक उपन्यास)

—: प्राप्ति—स्थान :—
बी—51, फेज—2, विवेक विहार, दिल्ली—110095

व्रजेश्वरी प्रकाशन
दिल्ली—110095
फोन : 011—22381344, मो. 9818519461

ISBN 978-93-81838-00-6

तारों की तरह हैं रचना

यूं तो मैंने कभी अपने बचपन में 'कमला दास' को नहीं जाना क्योंकि मुझे बचपन से ही साहित्य में रुचि थी, मुझे साहित्य-अध्ययन के समय 'कमला दास' को बहुत ही नजदीक से जानने समझने का अवसर मिला। कमला दास की एक कविता 'एन इंट्रोडक्शन' जो कि उनके काव्य संग्रह 'समर इन कोलकाता कलेक्शन' (1965)का ही एक भाग है, स्वयं में इतनी सशक्त है कि कमला दास की लेखनी को और अधिक जानने की उत्सुकता पाठकों में उत्पन्न होगी। यह संपूर्ण संग्रह कवयित्री की स्वयं की तलाश है, वह कहती हैं

" I am saint ,I am the beloved and the betrayed. I have no joys that are not yours. no Aches which are not yours, I too call myself I."

उनके इस काव्य संग्रह में,

1. The dance of the Eunuchs
2. The Freaks
3. Words
4. In love: Kamala Das
5. My Grandmother's House
6. Winter
7. A Relationship
8. Love
9. Punishment in Kindergarten
10. A Hot Noon in Malabar
11. Summer in Calcutta
12. The Sunshine Cat
13. Forest Fire
14. An Introduction
15. The Testing of the Sirens हैं।

कमला दास की रचनाएँ मात्र रचना ही नहीं होतीं ,यह किसी के मन में चल रहे ..तरह-तरह के भावों का बहुत ही सुंदर शब्द -चित्रण प्रस्तुत करती है। कमला दास जी कभी भी कुछ लिखने में हिचकिचायी नहीं कि यह समाज क्या कहेगा? अपितु पूरी ईमानदारी से इक इक भाव को अपनी लेखनी के माध्यम से पंक्तियों में बांधकर पाठकों के सामने रखती जाती हैं। उनकी लेखनी और उनका काव्य संग्रह इस बात का गवाह है कि वो कुछ भी कहने से डरती नहीं थी।

...शेष पृष्ठ 26 पर

वर्तिका अग्रवाल
वाराणसी उ.प्र.

कौन रोएगा आपकी मृत्यु पर?

पुस्तकें - मेरा पहला और आखिरी प्रेम ! बाल्यावस्था में मेरी घनिष्ठ मित्र, युवावस्था में सुनहरे ख्वाब दिखाने वाली जादू की छड़ी और अब संघर्ष के दिनों में यदा-कदा होने वाले घोर अवसाद से निज़ात दिलाने वाली रसीली मदिरा!

दरअसल, हुआ यह कि पुस्तक मेले में घूमते-घूमते अकस्मात मेरी नज़रें एक पुस्तक पर जा पड़ी जिसका कि शीर्षक था -'कौन रोएगा आपकी मृत्यु पर'... और मेरे हाथ स्वत: ही उसके पन्ने उलटने लगे...मोतियों जैसे अक्षरों में लिखे जीवन के स्वर्णिम सूत्र (लेखक की पूर्व प्रकाशित पुस्तक - 'द मोंक हू सोल्ड हिज फरारी' पुस्तक से संकलित जीवन का सार) हीरे की तरह चमक रहे थे और मैंने इस अमूल्य उपहार को अपने-आपको देने का तुरंत ही निर्णय ले लिया। पुस्तक का प्रारंभ होता है, एक शानदार वाक्य से कि, 'जीवन की त्रासदी मृत्यु में नहीं बल्कि जीते जी अपने अंतर्मन को मार देने में है।'

प्रथम अध्याय ही में रॉबिन शर्मा पूछते हैं कि, 'ऐसा कौन है जो आपकी मृत्यु पर रोनेवाला है ?'...यक़ीन मानिये, कई बार सोचना पड़ गया कि कौन और क्यों रोयेगा ? आगे लेखक कहते हैं कि, 'अपने वर्तमान कार्य को जीविकोपार्जन के लिये अवश्य करें परन्तु अपने उन गुणों को मौका जरूर दें जो सालों से इंतजार में हैं कि कब वो किसी के काम आयें - किसी भी इंसान, परिवार, समाज या देश के!' अंतर्मन को स्पर्श कर जाता है, उनका ये कहना कि, 'शिक्षा का अर्थ मात्र डिग्री या डिप्लोमा नहीं है अपितु ये हमारी वो योग्यता है जो हमसे वो आवश्यक कार्य सम्पादित करवाती है जो हमारे हित में हैं जिन्हें हम पसंद करें या न करें।' उनका कहना कि अतीत का आदर करो पर हमेशा उसके बारे में ही न सोचते रहो क्योंकि हम जो सोचते हैं वही बन जाते हैं-हाँ, अगर अतीत का पोस्टमार्टम करना जरूरी हो तो एक fix time तय कर लो...करो और फिर काम में लग जाओ। किस्मत को कोसना बंद करो क्योंकि बदकिस्मती में ही हमारी खुशकिस्मती छिपी होती है। हर बार फोन की घंटी बजने पर फोन न उठाओ। अपनी प्राथमिकतायें तय करो आदि-आदि...। मैंने 2012 में ये पुस्तक मात्र 135 रुपये में ली थी और आज तक मुझे इसका सान्निध्य वो सुकून देता है! वो सहारा देता है! जो बैंक में पड़े हजारों रुपये भी नहीं देते। धन्यवाद रोबिन मेरी जिंदगी में शांति लाने के लिए इस पुस्तक के रूप में।- "(International Bestseller WHO WILL CRY WHEN YOU DIE ? का हिंदी अनुवाद)

लेखक - रॉबिन शर्मा

शैली श्रीवास्तव
जयपुर (राज.)

खूबसूरत गुलदस्ता 'कैफियत'

जालाराम चौधरी
समीक्षक

लेखिका - रेणू वर्मा
पुस्तक - कैफियत (प्रथम ग़ज़ल संग्रह)
प्रकाशक - बोधि प्रकाशन
संस्करण - अप्रैल,2018
मूल्य - 175/-
आवरण छाया चित्र-मणि मोहन मेहता

रचनाकार रेणू वर्मा का प्रथम गज़ल सन्ग्रह 'कैफियत' जिन्हें मैं दूसरा नाम दूंगा प्राणों का संगीत। रचनाकार ने अपने जीवन के अनगिनत अनुभवों को सहेजकर... बेहद खूबसूरत गज़लों से भरे गुलदस्ते का नाम दिया 'कैफियत'। वैसे तो गज़ल दो लफ्ज़ों की कहानी है। मगर जब रेणू वर्मा ने गज़लें लिखीं तो लगा सचमुच गज़लें तो जीवन भर की कहानी हैं। रचनाकार ने कितना खूबसूरत कहा है- आँख रोती हैं हँसती हैं महफ़िल, क्या गज़ल में भी बेबसी कम हैं। कितनी खूबसूरती से लिखा है मानो एक आराधना की माला...जिसके चमकते मोतियो में अपने प्रिय के प्रति अथाह प्रेम। कहते हैं- करते हैं प्यार जो इबादत सा इश्क वो बे मिसाल करते हैं। इस जीवन भर की कहानी में तमाम तरह की खट्टी मीठी सी यादें जुड़ी हुई हैं। रचनाकार को प्रकृति से बेहद लगाव हैं तो साथ ही पशु पक्षियों के प्रति बेहद प्रेम। रचनाकार के दिल की ख्वाहिश है कि परिंदे कैदी ना हों वो खुलकर आसमां में उड़ें अपनी उड़ानों से आसमां नापे। वो झूलते पेड़ों पर बैठे साथ टेर मिलाकर गाये। इन ख्वाहिशों में कितना प्रेम हैं सचमुच रचनाकार रेणू वर्मा 'महादेवी वर्मा' का दूसरा रूप हैं। जितना ही प्रेम महादेवी जी को पशु पक्षियों के प्रति था। उनका उठना, बैठना, सोना, लिखना और सह जीवन जीना सबकुछ इस मासूम परिंदों के साथ जिनकी आँखों में सिर्फ और सिर्फ नि:स्वार्थ प्रेम हैं।

कैद के बाद वो परिन्दों को
अब परों का ख्याल करते हैं।

रचनाकार के दिल की ख्वाहिश हैं कि परिंदे कैदी ना हो वो खुलकर आंसमा में उड़े अपने उड़ानों से आंसमा नापे। वो झूलते पेड़ो पर बैठे साथ टेर मिलाकर गाये। इन ख्वाहिशों में कितना प्रेम हैं सचमुच रचनाकार रेणू वर्मा 'महादेवी वर्मा' का दूसरा रूप हैं। जितना ही प्रेम महादेवी जी को पशु पक्षियों के प्रति था। उनका उठना, बैठना, सोना, लिखना और सह जीवन जीना सबकुछ इस मासूम परिंदों के साथ जिनकी आँखों में सिर्फ और सिर्फ नि:स्वार्थ प्रेम हैं। रचनाकार ने अपनी नई नस्ल को सभ्यता संस्कृति की दुनिया बनाने का मशवरा दिया है। रचनाकार के लिए शायरी 'जूनून' का दूसरा नाम है। रचनाकार हिम्मत और दुआओं के हवाले से कहती हैं-

हिम्मतें हों अगर उड़ानों में,
फिर तो ये आसमान हैं उसका
जो दुआओं से जीत ले 'रेणू'
फिर तो सारा जहान है उसका

रचनाकार ने मोहब्बत के हवाले से एक शिकायत भी कितनी खूबसूरती से दर्ज की है आप कहते हैं-

भूलने का इरादा मत करना,
इश्क का तुम तमाशा मत करना।

एक कमी ज़हन में खल रही थी वह भी पूरी हो गयी कि बेटियों के लिये क्या लिखा गया? रचनाकार ने लिखा कि क्या कहूँ कितनी भली हैं बेटी- रोज़ आई हैं सुनामी की लहरें

रोज़ तूफां से लड़ी हैं बेटी
उन रिवाजों को जला देंगे
जिन रिवाजों से मरी हैं बेटी
आज फिर आसमाँ झुक जाएगा
आज फिर ज़िद पे अड़ी हैं बेटी

रचनाकार की चाहत हैं कि समूचे ब्रह्माण्ड में प्रेम हो... विश्वास हो। उसी शाश्वत प्रेम के भीतर एक खूबसूरत जहाँ देखते हैं जिसमें सभी मुस्कुराते रहें....कहते हैं-

प्यार से प्यार मुस्कुराने दो
खूबसूरत जहाँ बनाने दो।

प्रेम आजाद पंछी की तरह होता हैं...मगर तितली का फूलों से दूर रहना भी तो अच्छा नही हैं वो फूलो के साथ रहें उनकी गुंजन से फूल महके। उसी महक में लिपटकर रचनाकार अपने प्रिय को कहते हैं-

फूल पे तितली जैसे बैठी हैं
तुम भी ऐसे हमे गुलाम करो।

रचनाकार के प्रेम में पपीहे की पुकार भी हैं वही पपीहा जो इंद्र से बरखा की गुहार करता हैं और इंद्र उनकी मधुरता और विनम्रता के समक्ष नतमस्तक होकर धरा की तपिश को ठण्डक देता हैं। इससे अच्छी प्रेम की क्या परिभाषा होगी। जब अपनी प्रेमिका को चाँद कहे तो उनकी खुशी का ठिकाना ना होगा। यूँ ही लगता हैं कि दुनिया का एक मात्र चाँद हूँ मैं सच में ये ख्वाहिश कितनी खूबसूरत हैं तो प्रिय चाँद कितना खूबसूरत होगा। कहते हैं-

तू पपीहे सा मुझको पुकारा करें
चाँद मुझको भी अपना बना दे कभी।

रचनाकार रेणू वर्मा का ये प्रथम प्रसिद्ध गज़ल संग्रह... 'कैफियत' साहित्याकाश में नई किरणें फैलाकर रौशनी देगा।

सर्वश्रेष्ठ मित्र हैं पुस्तकें

अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध कवि लार्ड टेनीसन ने अपनी एक कविता में लिखा है कि यदि हम ध्यान से देखें तो वृक्षों से आवाज़, पत्थरों से उपदेश और दुनिया की प्रत्येक वस्तु में अच्छाई दिखाई देगी। इससे तात्पर्य यही है कि यदि हम ज्ञान ग्रहण करना चाहें तो इसके अनेक स्त्रोत हैं। विद्वानों की मान्यता है कि इनमें सबसे बड़ा और श्रेष्ठ स्त्रोत है पुस्तकें।

हम जानते हैं कि तलवार से भी अधिक ताकतवर है कलम। जब देश में आज़ादी का आंदोलन चल रहा था तब लोगों ने समाचार पत्र के माध्यम से आंदोलन को बल दिया। किसी भी आंदोलन के प्रचार प्रसार के लिए पुस्तकें आवश्यक हैं। इनके माध्यम से हम उन लोगों के विचारों से भी लाभान्वित हो सकते हैं जो अब इस संसार में नहीं हैं। विभिन्न विषयों की पुस्तकें हमारे साहित्य व संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं। लोग कहते हैं कि दिल में छुपी है तस्वीरें यार की, जब चाहा गर्दन झुकाई और देख ली। इसी प्रकार ज्ञान, विचार, धर्म, कविता, कहानी, नाटक, इतिहास, दर्शन और विज्ञान और विविध विषयों की जानकारी पुस्तकों में उपलब्ध है। हम कभी कहीं भी किसी भी समय पुस्तक उठाकर अपनी जिज्ञासा अथवा ज्ञान की पिपासा शांत कर सकते हैं, अत: पुस्तकें हमारी सर्वश्रेष्ठ मित्र हैं। पुस्तकें पढ़ने से डिग्रियां प्राप्त होती हैं, जिससे व्यक्ति की प्रतिष्ठा में चार चांद लगते हैं। जितने ध्यान से हम पुस्तकें पढ़ेंगे हम उतने ही लाभान्वित होंगे। अच्छी पुस्तक पढ़ने के बाद हम अपने आपको अधिक ज्ञानवान महसूस करते हैं। बड़े ग्रंथ, पुस्तक, महाकाव्य आदि के आधार पर ही विभिन्न धर्मों का ज्ञान पीढ़ियों तक पहुंचता रहता है।

एक अनुमान के अनुसार विश्व में करीब 130 मिलियन पुस्तकें उपलब्ध हैं। अमेरिका में ही प्रतिवर्ष करीब 10 लाख पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। इसलिए अपनी रुचि के अनुसार पुस्तकें खरीदकर पुस्तकालय से प्राप्त कर अथवा अपने मित्रों से लेकर पुस्तकें पढ़नी चाहिए। पुस्तक मेले भी लगते हैं, समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में पुस्तक समीक्षा भी प्रकाशित होती रहती हैं।

देवी सिंह नरूका
स्वतंत्र लेखक

अत: पढ़ने के लिए हम पुस्तकों का चयन कर सकते हैं। 23 अप्रैल को प्रतिवर्ष विश्व पुस्तक दिवस मनाया जाता है। विलियम शेक्सपीयर, वर्ड्सवर्थ व अन्य साहित्यकारों की पुण्यतिथि के कारण ही यह दिवस निर्धारित किया गया है। पुस्तक पढ़ना एक आदत है, अत: हमें अधिकाधिक अच्छी पुस्तकें पढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

कॉपीराइट (प्रतिलिप्याधिकार)

शिवकुमार 'अवार' फौजदार
एडवोकेट, राजस्थान उच्च न्यायालय
कॉर्पोरेट कंसलटेंट, प्रेरक प्रवक्ता, सफल कॉर्पोरेट लॉयर मो. 8290123456

कॉपीराइट का अर्थ कॉपीराइट प्रतियॉ बनाने का अधिकार होता है अर्थात् किसी भी रचना, कहानी कविता, पुस्तक, फिल्म, गाना, कैसेट, डिजाइन, चित्र, चार्ट, पेंटिंग, मूर्तिकला की प्रतियां बनाने को कॉपीराइट कहते हैं। किसी समाज का आर्थिक और सामाजिक विकास रचनात्मकता पर निर्भर हैं। लेखकों, कलाकारों, डिजाइनरों, नाटककारों, संगीतकारों, आर्किटेक्ट्स और साउण्ड रिकॉर्डिग, सिनेमाटोग्राफ फि ल्मों और कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर के निमार्ताओं के प्रयासों के लिए कॉपीराइट द्वारा प्रदान की गई सुरक्षा रचनात्मकता के लिए अनुकूल माहौल बनाती है, जो उन्हें और अधिक बनाने के लिए प्रेरित करती है।

कॉपीराइट अधिनियम 1957, केवल विचारों की मूल अभिव्यक्ति के विरूद्ध संरक्षण प्रदान करता है, विचारों की नहीं। क्योकिं विचार संयुक्त परिसम्पत्ति है, जिनका आनन्द सभी उठाते हैं।

कॉपीराइट का अधिग्रहण स्वत: है तथा कॉपीराइट पंजीयन अनिवार्य नहीं है। तथापि कॉपीराइट का पंजीयन कॉपीराइट के स्वामित्व से सम्बद्ध किसी विवाद के सन्दर्भ में किसी न्यायालय में प्राथमिक साक्ष्य का कार्य करता है।

कॉपीराइट साहित्यिक, नाट्य, संगीत एवं कलात्मक कृतियों, सिनेमेटोग्राफ फिल्म व ध्वनि रिकॉडिंग में मान्य है। कम्प्यूटर प्रोग्राम व डाटाबेस भी भारतीय कानून के अधीन साहित्यिक कृतियों के रूप में संरक्षित है।

साहित्यिक, नाटक, कलात्मक एवं संगीत सम्बधिंत कृतियों के प्रकरण में कॉपीराइट संरक्षण की अवधि लेखक का जीवन भर तथा

साठ वर्ष तक है। कॉपीराइट किए गये कार्य क लेखक को स्वामी होने के नाते अपनी कृतियों के सन्दर्भ में कुछ विषेष एकमात्र आर्थिक अधिकार मिलते हैं। इनमें रिप्रोड्यूस करने, प्रकाशित करने, एडेप्ट करने, अनुवाद करने तथा संवाद अथवा सार्वजनिक प्रदर्षन के अधिकार सम्मिलित हैं। स्वामी अपनी इच्छानुसार किसी अन्य पार्टी को कॉपीराइट सौंप सकता है व लाइसेंस दे सकता है।

कॉपीराइट का उल्लंघन तब होता है, जब कोई व्यक्ति बगैर अनुमति या बगैर लाइसेंस के उपयुर्क्त में से कोई भी कार्य करता है। इससे कॉपीराइट के मालिकों को अर्थिक हानि होती है। आर्थिक हानि के अतिरिक्त, यह सृजनात्मकता को भी दुष्प्रभावित करता है। 'ई-फाईलिंग सुविधा' के माध्यम से ऑन लाइन पंजीकरण 14 मई 2014 से प्रदान किया गया है, जिसके लिए डिजिटल हस्ताक्षर की आवश्यकता होती है। कुछ शर्तों के अधीन, शोध, अध्ययन, आलोचना, समीक्षा और समाचार रिर्पोटिंग साथ ही पुस्तकालय और स्कूलों में और विधानसभाओं में कार्यों के उपयोग के लिए उचित सौदा, कॉपीराइट मालिकों की विशिष्ट अनुमति के बिना भी उपयोग में लिया जा सकता है। कॉपीराइट स्वामी किसी भी व्यक्ति के खिलाफकानूनी कार्यवाही कर सकता है, जो काम में कॉपीराइट का उल्लंघन करता है। कॉपीराइट स्वामी निषेधाज्ञायों, हर्जाने और खातों के माध्यम से उपचार के हकदार हैं। कॉपीराइट उल्लंघन के सम्बधं में सिविल कोर्ट में सम्बधिंत जिला न्यायालय का क्षेत्राधिकार है। कॉपीराइट के उल्लंघन संज्ञेय अपराध है। उल्लंघन करने पर न्यूनतम सजा 50,000 रूपये के जुमार्ना के साथ छह महीने के लिए कारावास है। दूसरी बार सजा का प्रावधान न्यूनतम 1,00,000 रू जुमार्ना और एक वर्ष का कारावास का प्रावधान है।

गालिब से मिलाती है 'दीवान ए गालिब'

अरविंद शर्मा
स्वतंत्र लेखक एवं कवि
जयपुर, राजस्थान

एक बेहतरीन शायर वक्त का भी वक्त होता है गति का भी, गति, समय की गति से भी तेज जिसके प्रवाह में भावनाओं का उदयमान होना और व्यक्तित्व का निखरना उसकी श्रेष्ठता को सिद्ध करता है। ऐसे ही एक श्रेष्ठतम शायर हैं 'मिर्ज़ा गालिब'।

हमारे आपने मस्तिष्क का विस्तार असीमित होता है परन्तु फिर भी एक व्यक्ति का दिमाग चाहे वह कितना भी विशाल क्यों न हो वह सीमित ही रहता है। बड़े से बड़े विद्वान चिंतक भी इसका अपवाद नहीं है, किंतु जो कुछ भी वह लिखता है कहता है उसकी रचना, कविता या उसका कोई सपना जिसको वह अपने व्यक्तित्व से भिन्न करके समाज और दुनिया के सामने रखता है तो वह असीमित विस्तार धारण कर लेता है।

गालिब उनमें से एक है, उनकी बेहतरीन रचनाओं का एक संग्रह 'दीवान ए गालिब' के बारे में आपको बता चाहता हूं। गालिब साहेब का ये संग्रह दुनिया मे सबसे ज्यादा पढ़ा जाने वाला कविता,शायरी या गज़ल का संग्रह है। गालिब की हर एक पंक्ति एक हज़ार नए अर्थ पैदा कर सकती है। उन्होंने जो कुछ भी लिखा है दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन से किसी न किसी तरह परोक्ष या अपरोक्ष रूप से जुटी है।

चाहे व्यक्ति प्रेम में डूबा हो, दुनिया की जद्दोजहद से लड़ रहा हो, प्यार में धोखा खाया हो या जीवन की कठिनाइयों से हारा हो, गालिब की पंक्तियों से अछूता नहीं है। उनकी एक ही पंक्ति एक ही समय में अलग अलग व्यक्ति से अलग अलग भावनाओं से सामंजस्य रखती है।

गालिब साहेब की रचनाओं में इतना विस्तार है कि वो आने वाली जिंदगी की खुशियों ओर गमों को समेट सके, ये जीवन को यथार्थ दृष्टी से देखते है जो कोरी भावना ओर विचारशून्य शब्दों की बाजीगरी से एकदम अलग है, ये उस वक्त पैदा होती है जब रचनाकार अपने युग में हावी हो और अपने शब्दों के संगीत और भावना की सच्चाई से भलीभांति परिचित हो, जैसे एक संगीतकार अपने साथ के तारों से परिचित होता है। साहित्य के लंबे इतिहास में ऐसे चंद गिने चुने महान विभूतियों में से एक है मिर्जा गालिब।

आज की अपनी युवा पीढ़ी को मेरी सलाह है अपने आपको तराशने के लिए जीवन में एक बार दीवान ए गालिब को जरूर पढ़ा जाए इससे उन्हें जरूर स्वयं को परखने व स्वयं को बेहतर बनाने में अतुलनीय सहयोग प्राप्त होगा।

शायरी में जज्बा नहीं जज्बात होने चाहिये, कुछ बिगडे हुये हालात होने चाहिये, बूंद दो बूंद अश्कों की नहीं औकात, आंखों में दर्द के कई सैलाब होने चाहिये, बयाँ कर सको खुल के कुछ इस तरह, हर बात में कुछ वो बात होनी चाहिये, जरूरी नहीं कि मिजाज इश्किया हो, बस समझे जमाना वो राज़ होने चाहिए, मुनव्वर होगा तू खुद ब खुद एक दिन, थोड़ा कैफ़ी थोड़ा मीर थोड़ा गालिब होना चाहिए।

कलम के 'सिकंदर' पंडित सुदर्शन

मुंशी प्रेमचंद की ही तरह पंडित सुदर्शन भी उर्दू से हिंदी लेखन की तरफ आए थे। इन दोनों साहित्यकारों में एक समानता ये भी थी कि दोनों ने ही सिनेमा के क्षेत्र में किस्मत आजमाने की कोशिश की थी।

शिशिर कृष्ण शर्मा
फिल्म इतिहासकार
मो. 9821394486

'हार की जीत'!...बाबा भारती और उनके चहेते घोड़े सुल्तान पर लालची नजरें गड़ाए बैठे डाकू खड़गसिंह के किरदारों के इर्द-गिर्द घूमती कहानी 'हार की जीत' का हिंदी साहित्य में वो ही स्थान है जो मुंशी प्रेमचंद की 'ईदगाह' और चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की 'उसने कहा था' जैसी कालजयी रचनाओं का है। लेकिन अफसोस, कि मुंशी प्रेमचंद, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' और उन जैसे कई अन्य कहानीकारों के विपरीत 'हार की जीत' के रचनाकार पंडित सुदर्शन के बारे में आम पाठकों को ज्यादा जानकारी नहीं है। दरअसल मुंशी प्रेमचंद की ही तरह पंडित सुदर्शन भी उर्दू से हिंदी लेखन की तरफ आए थे। इन दोनों साहित्यकारों में एक समानता ये भी थी कि दोनों ने ही सिनेमा के क्षेत्र में किस्मत आजमाने की कोशिश की थी। फर्क सिर्फ इतना है कि मुंशी प्रेमचंद को फिल्मी दुनिया रास नहीं आयी और 1934 में बनी फिल्म 'मिल मजदूर' लिखने के बाद वो वापस लौट गए तो वहीं दूसरी तरफ पंडित सुदर्शन हिंदी सिनेमा में धाक जमाने में पूरी तरह से कामयाब रहे। हिंदी सिनेमा के इतिहास में गहरी दिलचस्पी रखने वालों को भी शायद पता न हो कि जिस गीत से फिल्मों में प्लेबैक की शुरूआत हुई थी वो पंडित सुदर्शन की ही कलम से निकला था। करीब दो दशकों के करियर के दौरान पंडित सुदर्शन ने एक से बढ़कर एक फिल्में और गीत लिखे और फिर चमक-दमक भरी फिल्मी दुनिया को अलविदा कहकर खुद को पूरी तरह से साहित्य के प्रति समर्पित कर दिया था।

साल 1896 में स्यालकोट (अब पाकिस्तान) के एक सम्पन्न परिवार में जन्मे पंडित सुदर्शन का असली नाम बद्रीनाथ शर्मा था। एक बेटी और चार बेटों के बीच माता-पिता की दूसरी संतान बद्रीनाथ महज 10-12 साल के थे जब उनके माता-पिता गुजर गए थे। तमाम मुश्किलों के बीच उन्होंने स्यालकोट से बी.ए. किया और फिर काम की तलाश में लाहौर चले आए। लिखने का शौक बचपन से ही था इसलिए लाहौर से निकलने वाली उर्दू पत्रिका 'हजार दास्तां' में लिखने लगे। 20-21 साल की उम्र में उनकी शादी हुई, पत्नी बटाला-गुरदासपुर से थीं और मैट्रिक पास थीं जो कि उस जमाने में लड़कियों के लिए बहुत बड़ी बात थी। शादी के बाद जिम्मेदारियां बढ़ीं तो उर्दू में अपना खुद का अखबार निकालना शुरू किया जिसने जल्द ही बाजार के एक बहुत बड़े हिस्से पर कब्जा जमा लिया। ऐसे में ईर्ष्या-द्वेष और साजिशों का दौर शुरू हो गया। पैसे के जोर पर अखबार को पाठकों तक पहुंचने से रोका जाने लगा। नतीजतन कुछ ही सालों में हालात बिगड़ने शुरू हुए तो फिर सम्भल ही नहीं पाए। मजबूरन पंडित सुदर्शन को लाहौर छोड़ देना पड़ा। उधर साल 1920 में इलाहाबाद से

छपने वाली पत्रिका 'सरस्वती' में उनकी लिखी पहली हिंदी कहानी 'हार की जीत' प्रकाशित हुई थी जिसे पाठकों ने बेहद पसंद किया था।

पंडित सुदर्शन की बेटी श्रीमती प्रभा रामदेव कनागत ने हाल ही में हुई मुलाकात के दौरान बताया कि साल 1932 में पंडित सुदर्शन परिवार के साथ कोलकाता चले आए। कोलकाता में उन दिनों 'न्यू थिएटर्स', 'मॉर्डन थिएटर्स', 'ईस्ट इंडिया फिल्म कंपनी', 'पायोनियर फिल्म्स', 'बरुआ पिक्चर्स', 'राधा फिल्म कंपनी' 'दुर्गा इंटरनेशनल फिल्म्स', 'बी.आई.क्वालिटी फिल्म्स', 'काली फिल्म्स' और 'भारत लक्ष्मी पिक्चर्स' जैसी कई छोटी-बड़ी कंपनियां लगातार हिंदी फिल्में बनाने में जुटी हुई थीं। टॉकी फिल्मों का वो शुरूआती दौर था और अच्छा लिखने वालों की जबर्दस्त मांग थी। ऐसे में पंडित सुदर्शन को काम मिलते देर नहीं लगी। उनके करियर की पहली फिल्म 'रामायण' थी जो साल 1934 में प्रदर्शित हुई थी। 'भारत लक्ष्मी पिक्चर्स' की इस पौराणिक फिल्म के संगीतकार थे मास्टर नागरदास नायक और कलाकार थे पृथ्वीराज कपूर, विट्ठलदास पंचोटिया, दादाभाई सरकारी, देवबाला, इंदुबाला, राजकुमारी नायक और शहजादी। पंडित सुदर्शन ने कथा-पटकथा और संवाद लिखने के अलावा प्रफुल्ल रॉय के साथ मिलकर इस फिल्म का निर्देशन भी किया था। साल 1935 में 'भारत लक्ष्मी पिक्चर्स' के बैनर में ही पंडित सुदर्शन की लिखी अगली फिल्म 'कुंवारी या विधवा' प्रदर्शित हुई जिसका निर्देशन एक बार फिर से पंडित सुदर्शन और प्रफुल्ल रॉय की जोड़ी ने किया। इसके संगीतकार भी मास्टर नागरदास नायक और कलाकार अब्दुल्ला काबुली, जरीना खातून, शहजादी, मास्टर फिदा हुसैन, इंदुबाला, कमला, आर.पी.कपूर और दुर्लभराम थे। इसके बाद पंडित सुदर्शन 'भारत लक्ष्मी पिक्चर्स' छोड़कर 'न्यू थिएटर्स' में चले गए।

'न्यू थिएटर्स' उस दौर की जानी-मानी कंपनी थी जो साहित्यिक कृतियों पर बनी संगीतमय और उत्कृष्ट सामाजिक फिल्मों के लिए जानी जाती थी। पंकज मल्मिक, रायचंद बोराल, कुंदनलाल सहगल, मिज्जन कुमार, देवकी बोस, के.सी.डे, रतनबाई, पहाड़ी सान्याल, प्रेमांकुर अटार्थी, उमा शशि, नितिन बोस, प्रथमेश बरुआ और केदार शर्मा जैसे दिग्गज इसी कंपनी में रहकर काम कर रहे थे। उस वक्त तक प्लेबैक की शुरूआत नहीं हुई थी और कलाकारों को कैमरे के सामने खुद ही गाना पड़ता था। भारत में प्लेबैक का पहली बार इस्तेमाल साल 1935 में बनी 'न्यू थिएटर्स' की फिल्म 'धूप-छांव' में हुआ था। रायचंद बोराल द्वारा संगीतबद्ध वो एक समूहगीत था, 'मैं खुश होना चाहूं खुश हो न सकूं' जिसे पारूल घोष, सुप्रोवा सरकार, हरिमति और साथियों ने गाया था। फिल्म 'धूप-छांव' के 'रायचंद बोराल' और 'पंकज मल्लिक' द्वारा संगीतबद्ध किए सभी 10 गीत पंडित सुदर्शन ने लिखे थे जिनमें के.सी.डे के गाए दो गीत 'बाबा मन की आंखें खोल' और 'तेरी गठरी में लागा चोर मुसाफिर' आज भी उतने ही लोकप्रिय हैं।

पंडित सुदर्शन का देहांत हुए भले ही 45 साल गुजर चुके हों और भले ही उनका नाम आज की पीढ़ी के लिए अनजाना सा हो लेकिन उनकी लेखनी ऐसी चमत्कृत कर देने वाली थी कि सिनेमा और साहित्य की दुनिया में उनका नाम हमेशा अमर रहेगा।

पंडित सुदर्शन की अगली फिल्म 'धरती माता' का निर्माण भी 'न्यू थिएटर्स' के बैनर में हुआ था। साल 1938 में प्रदर्शित हुई ये फिल्म अपने वक्त की बहुत बड़ी हिट साबित हुई। इस फिल्म के सभी 9 गीत पंडित सुदर्शन ने ही लिखे थे। पंकज मल्लिक द्वारा संगीतबद्ध किए और सहगल, उमा शशि और पंकज मल्लिक के गाए इन गीतों में 'दुनिया रंग-रंगीली बाबा', 'मैं मन की बात बताऊं', 'किसने ये सब खेल रचाया' और 'अब मैं का करूं कित जाऊं' जैसे मशहूर गीत शामिल हैं। लेकिन 'धरती माता' जैसी हिट फिल्म देने के बावजूद पंडित सुदर्शन को कोलकाता छोड़ना पड़ा।

श्रीमती प्रभा रामदेव कनागत के मुताबिक पंडित सुदर्शन की सफलता कुछ लोगों को रास नहीं आयी और उनके खिलाफ साजिशें रची जाने लगीं। मजबूरन उन्हें कोलकाता छोड़कर परिवार सहित मुंबई चले आना पड़ा, जहां उन्हें 'सागर मूवीटोन' की फिल्म 'ग्रामोफोन सिंगर' की कथा-पटकथा लिखने का मौका मिला। ये फिल्म साल 1938 में प्रदर्शित हुई थी। 'सागर मूवीटोन' की ही 1940 में बनी फिल्म 'कुमकुम द डांसर' में उन्होंने सभी 6 गीत लिखे जिन्हें संगीतकार 'तिमिर बरन' ने संगीतबद्ध किया था। 1940 में ही पंडित सुदर्शन को 'रणजीत मूवीटोन' की फिल्म 'दीवाली' में संगीतकार 'खेमचंद प्रकाश' के साथ काम करने का मौका मिला, हालांकि उस फिल्म के कुछ गीत दीनानाथ मधोक और प्यारेलाल संतोषी ने भी लिखे थे।

पंडित सुदर्शन की पहचान तो कोलकाता में रहते ही बन चुकी थी, मुंबई आने पर उनकी जान-पहचान का दायरा भी बढ़ने लगा था। निर्माता-निर्देशक-अभिनेता और 'मिनर्वा मूवीटोन' के मालिक सोहराब मोदी उस दौर का एक बड़ा नाम थे। पंडित

सुदर्शन के लेखन से वो इतने प्रभावित थे कि जब उन्होंने भारी-भरकम बजट की ऐतिहासिक फिल्म 'सिकंदर' बनाने का फैसला किया तो उसकी कथा-पटकथा-संवाद और गीतों के अलावा तमाम रिसर्च की जिम्मेदारी भी पंडित सुदर्शन को सौंप दी। साल 1941 में बनी फिल्म 'सिकंदर' बहुत बड़ी हिट साबित हुई। इस फिल्म का गीत-संगीत भी बेहद लोकप्रिय हुआ था। मीर साहब और रफीक गज़नवी द्वारा संगीतबद्ध इस फिल्म में कुल सात गीत थे। मुख्य भूमिकाओं में थे सोहराब मोदी, पृथ्वीराज कपूर, वनमाला, के.एन.सिंह, और जिल्लोबाई। साल 1940 में मराठी फिल्म 'लपंडाव' से करियर की शुरूआत करने वाली अभिनेत्री वनमाला की ये पहली हिंदी फिल्म थी। साल 1941 की ही, पुणे की प्रभात फिल्म कंपनी' की वी.शांताराम द्वारा निर्देशित हिट फिल्म पड़ोसी के भी सभी 11 गीत पंडित सुदर्शन ने ही लिखे थे, जिसके संगीतकार थे मास्टर कृष्ण राव। उधर 'सिकंदर' की कामयाबी के बाद पंडित सुदर्शन ने 'मिनर्वा' की 3 और फिल्में 'फिर मिलेंगे' (1942) 'पृथ्वीवल्लभ' (1943) और 'पत्थरों का सौदागर' (1944) लिखीं। इनमें से 'पृथ्वीवल्लभ' और 'पत्थरों का सौदागर' उनकी अपनी कहानियों पर बनी थीं। इसके अलावा उन्होंने 'सेंट्रल स्टूडियोज' की 'परख' (1944), 'प्रफुल्ल पिक्चर्स' की 'सुभद्रा' (1946), 'कुलदीप पिक्चर्स लिमिटेड' की 'जलतरंग' (1949) में भी गीत लिखे और फिर वो निर्माता एम. सोमसुंदरम के बुलावे पर मद्रास चले गए। करीब 2 साल मद्रास में रहकर उन्होंने एम.सोमसुंदरम की कंपनी 'जुपिटर पिक्चर्स' की दो फिल्मों 'एक था राजा' (1951) और 'रानी' (1952) में अपनी कलम का जादू बिखेरा और फिर फिल्मों से हमेशा के लिए किनारा करके वापस मुंबई लौट आए। इस तरह से 'रानी' उनके करियर की आखिरी फिल्म साबित हुई।

श्रीमती प्रभा रामदेव कनागत बताती हैं कि मुंबई लौटने के बाद पंडित सुदर्शन पूरी तरह से साहित्य साधना में जुट गए। उन्होंने कई नाटक लिखे और 'हार की जीत' के अलावा उनकी लिखी 'सच का सौदा', 'अठन्नी का चोर', 'साईकिल की सवारी', 'तीर्थयात्रा', 'पृथ्वीवल्लभ' और 'पत्थरों का सौदागर' जैसी कहानियां भी काफ़ी सराही गयीं। और जैसा कि एक बार महात्मा गांधी ने उन्हें खासतौर से वर्धा बुलाकर कहा था कि आप हिंदी के प्रचार के लिए किताबें लिखिए तो समय मिलते ही उन्होंने महात्मा गांधी की आज्ञा का पालन भी किया। इस दिशा में पंडित सुदर्शन की लिखी किताब 'सबकी बोली' कई सालों तक चौथी कक्षा तक सभी स्कूलों में पढ़ाई जाती रही। कलम के धनी पंडित सुदर्शन का निधन 16 दिसम्बर 1967 को 72 साल की उम्र में मुंबई में हुआ।

4 बेटों और 1 बेटी के पिता पंडित सुदर्शन के बड़े बेटे विद्याभूषण शर्मा सोहराब मोदी के साथ बतौर सह-निर्देशक काम करते रहे तो छोटे बेटे शशिभूषण ने प्रोफ़ेसर, मोहब्बत ज़िंदगी है, अनामिका, पॉकेटमार, जलमहल, लावारिस और प्रेमगीत जैसी फिल्मों के लेखक के तौर पर नाम कमाया। उनके चारों बेटे अब इस दुनिया में नहीं हैं। सिर्फ एक बेटी हैं जो 87 साल की हो चुकी हैं और मुंबई के जुहू-वर्सोवा लिंक रोड पर अपने बेटे अशोक कनागत के साथ रहती हैं। अशोक विज्ञापन फिल्मों के निर्माता हैं।

पंडित सुदर्शन का देहांत हुए भले ही 45 साल गुजर चुके हों और भले ही उनका नाम आज की पीढ़ी के लिए अनजाना सा हो लेकिन उनकी लेखनी ऐसी चमत्कृत कर देने वाली थी कि सिनेमा और साहित्य की दुनिया में उनका नाम हमेशा अमर रहेगा।

क्रमशः पृष्ठ 22 से....

उनकी कविताओं ने मुझे अंदर तक झकझोर कर रख दिया। मैं सोचने लगी एक स्त्री होकर इतना सब कुछ कह पाना बिना यह सोचे कि समाज क्या कहेगा साहित्य में भी एक जंग से कम नहीं, जैसे कि... रानी लक्ष्मीबाई का देश की आजादी के लिए लड़ना ..बिना यह सोचे कि लोग क्या कहेंगे ? अपने एक मजबूत इरादों की बात है। कमला सुरय्या का पूर्व नाम.. कमला दास अंग्रेजी व मलयालम भाषा को भारतीय लेखिका थी। वे मलयालम भाषा में माधवी कुट्टी नाम से लिखती थी। उन्हें अपनी आत्मकथा 'माई स्टोरी' से अधिक प्रसिद्धि मिली। उनकी प्रमुख रचनाओं में -

1. ओनली द सोल नोज हाउ टू सिंग
2. या अल्लाह
3. ओल्ड प्लेहाउस एंड अदर पोयम्स
4. समर इन कैल्कटा
5. माई स्टोरी
6. अ डॉल फॉर द चाइल्ड प्रॉस्टिट्यूट
7. माधवीकुट्टी कथाकल

कमला दास को कितने ही पुरस्कारों से नवाजा गया है।

1. साहित्य अकादमी पुरस्कार
2. केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार (कोल्ड)के लिए
3. डी.लिट्. की मानद उपाधि कालीकट विश्वविद्यालय द्वारा

कमला दास की रचनाएँ साहित्य गगन में उन अनगिनत तारों की तरह है जो निरंतर जगमगाते रहते हैं और पाठक आकर्षित हुए बिना नहीं रह पाते हैं।

कमला दास की लेखनी हर बात को लेकर इतनी मजबूत और निष्पक्ष है कि मेरी लेखनी के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन चुकी है। मेरे लिए कमला दास की कलम और उनकी रचनाएं एक माँ की तरह हैं।

सफलतम एक वर्ष अब द्वितीय वर्ष का सफर है जारी...

अप्रेल, 2018

मई, 2018

जून, 2018

जुलाई, 2018

अगस्त, 2018

सितम्बर, 2018

अक्टूबर, 2018

नवम्बर, 2018

दिसम्बर, 2018

जनवरी, 2019

फरवरी, 2019

मार्च, 2019

अप्रेल, 2019

मई, 2019

जून, 2019

जुलाई, 2019

अगस्त, 2019

बेहद कम समय में देश और विदेश में लोकप्रिय हो रही मासिक पत्रिका माही संदेश के बाल विशेषांक के लिए लेखन सामग्री आमंत्रित है।

जल्द आ रहा है माही संदेश मासिक पत्रिका का बाल विशेषांक

अपनी रचनाएं फोटो व अपने पूर्ण पते के साथ

ईमेल करें : mahisandesh31@gmail.com
मोबाइल एंड व्हाट्सएप: 9887409303

Happy Birthday जन्मदिवस की शुभकामनाएं Happy Birthday

अंश झा

08/09/2010

Happy Birthday

दादी- आशा झा
नानी- सुनीला झा
नाना - हरिशंकर झा
बड़े पापा- अजीत झा
बड़ी मम्मी- पूजा झा
पापा - संदीप झा
मम्मी- कनिका झा
बुआ-सुमन झा, फूफा-धर्मेन्द्र मिश्रा
मामा- मुकुन्द झा
भाई - विशाल, हार्दिक, आर्यन

तस्वीर खींचने का शौक अब जुनून है

सुधीर कासलीवाल

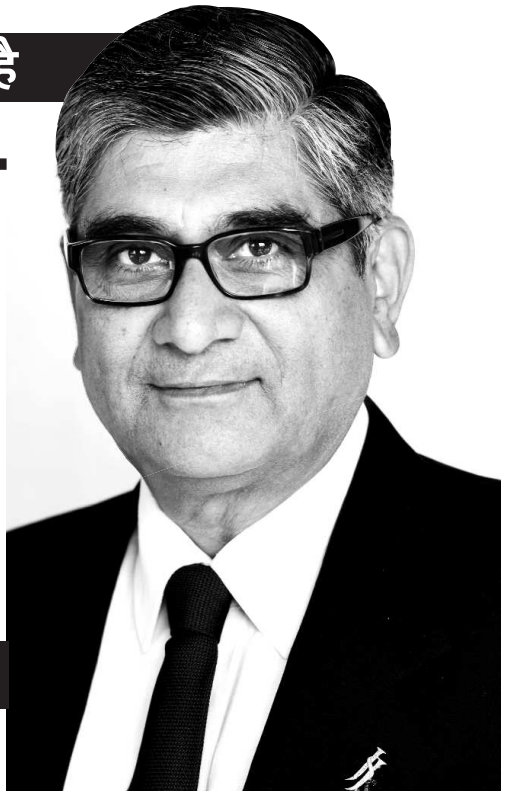

किताब की शक्ल में संवार रखी हैं तस्वीरें

शाम का *वक्त था और जगह चौड़ा रास्ता जयपुर स्थित मशहूर देवदास आर्ट स्टूडियो वहीं पर शहीदों के लिए समर्पित चित्रकार चन्द्रप्रकाश गुप्ता जी से बात चल रही थी कि माही संदेश पत्रिका का सितंबर अंक 'चलें किताबों की ओर' योजना पर आधारित है, बात फिर फोटोग्राफी रूप में किताबों के संग्रह तक जा पहुंची थी एक नाम उभर कर सामने आया जो आज भी न केवल कला को समर्पित है बल्कि समाज में अपनी विशेष पहचान रखते हैं, वो नाम है सुधीर कासलीवाल जी का।*

उसी वक्त सुधीर कासलीवाल जी से फोन पर बात की और अगले दिन दोपहर तीन बजे, जैम पैलेस में मुलाकात होना तय हुआ। जब सुधीर कासलीवाल जी से मिलने पहुंचे तो जैसा सुना था उससे कहीं बढ़कर उनका काम और नाम देखने को मिला। आज भी सुधीर कासलीवाल जी के घर फोटोग्राफी का डार्क रूम बना हुआ जिसमें सुधीर अपना फोटोग्राफी कला का शौक पूरा कर रहे हैं। खास बात यह है कि इस डार्क रूम में लगी हुई मशीन भी तब की है जब सुधीर नवीं कक्षा में पढ़ते थे।

बातों का सिलसिला आगे बढ़ रहा था, दफ्तर में सुधीर कासलीवाल जी की खींची हुई तस्वीरें एक से बढ़कर एक थीं जो स्वत: ही मेरा ध्यान अपनी ओर खींच रही थीं। कहते हैं न कि पीढ़ी दर पीढ़ी तक गुण चलते रहते हैं। सुधीर कासलीवाल जी के पिता लक्ष्मीकुमार कासलीवाल जी भी शौकिया फोटोग्राफी करते थे और इन्हीं की तरह कला प्रेमी भी थे। होटल जयमहल पैलेस का नामकरण व नींव लक्ष्मीनारायण कासलीवाल जी के मार्गदर्शन में ही रखी गई थी। इसके साथ ही जैम सिनेमा आधुनिक साउंड सिस्टम तकनीक से युक्त बनने वाला राजस्थान का पहला सिनेमा हॉल था। वर्ष 1852 से हीरे-जवाहरात का काम पिछले छह पीढ़ियों से चलता आ रहा है और आज जैम पैलेस ने न केवल देश में बल्कि विदेशों में भी अपनी प्रमुख पहचान बनाई है।

फोटोग्राफी से जुड़ी पुस्तकें सहेजने का है शौक

सुधीर कासलीवाल जी कहते हैं कि पुस्तकों का जीवन में विशेष महत्व है, यही पुस्तकें हमें ज्ञान रूपी अमृत का पान कराती हैं। मैंने भी अपनी खींची तस्वीरों को पुस्तकों की आकृति में ढाल भूटान प्रथम भाग, भूटान द्वितीय भाग, चाइना आदि नामों से सहेजकर रखा हुआ है। इसके अलावा कई लिफाफों आज भी पुरानी यादें तस्वीर के रूप में सहेजी हुई हैं। समय समय पर कई तस्वीरें अखबारों व विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुई, जिसकी खुशी तब तो थी ही आज भी बरकरार है।

जुनून है फोटोग्राफी

सुधीर कासलीवाल जी ने उस घटना का भी जिक्र किया जब जयपुर में वर्ष 1981 में बाढ़ आई थी, उस बाढ़ की तस्वीरें आज भी इनके पास मौजूद हैं। इन तस्वीरों को देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है कि उस समय किन विपरीत हालातों में इन्होंने फोटोग्राफी की होगी। हर एक तस्वीर चाहे वह जेएलएन मार्ग स्थिति ओटीएस की ढही दीवार हो या बाढ़ से उजड़ी गलता जी का दृश्य, यह सिर्फ एक कला को समर्पित मन ही कर सकता है। गुजरे जमाने की बात करते हुए सुधीर कासलीवाल जी कहते हैं कि अब तकनीक काफी विकसित हो गई है, पहले कैमरे में रील डालकर फोटो खींची जाती थी, पहले पता होता था कि यदि तस्वीर खराब क्लिक कर ली तो रील में एक फोटो की जगह खराब हो जाएगी, इसलिए पहले फोटोग्राफर तल्लीनता से एक ही शॉट में तस्वीर लेते थे आज तकनीक बढ़ने से खराब होने का डर नहीं है एक शॉट को लेने के लिए पचास तस्वीर तक भी लोग लेते हैं, तकनीक ने सुविध तो दी है लेकिन जो आनंद उस एक शॉट को लेने में आता था वो आज पचास क्लिक पर भी नहीं आता।

विंटेज और क्लासिक कार हैं पसंद

सुधीर कासलीवाल जी बताते हैं कि प्रतिवर्ष जयपुर में आयोजित होने वाली विंटेज और क्लासिक कार की रैली की शूरुआत हमने 10 कारों से की और अब प्रतिवर्ष यह आंकड़ा 100 कारों तक पहुंच गया है।

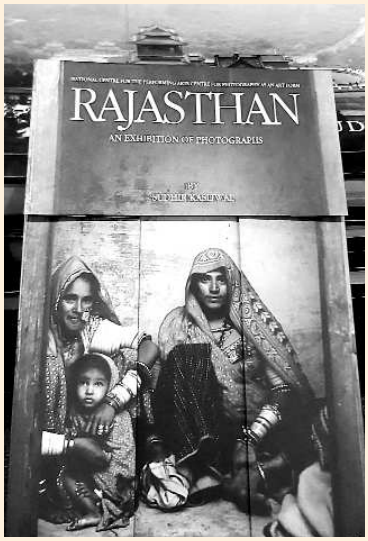

फोटोग्राफी कला से मिले पुरस्कार

देश ही नहीं विदेशों में सुधीर कासलीवाल की फोटोग्राफी को सराहा गया है। सुधीर ने सन 1993 में यूनेस्को द्वारा कराए गए वर्ल्ड फोटोग्राफी कॉन्टेस्ट में अवॉर्ड भी जीता है। अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति बिल क्लिंटन के लिए राजस्थान सरकार द्वारा भेजे गए एक ब्रोशर में सुधीर की खींची गई जयपुर की तस्वीरें शामिल हैं। इन्हें सराहनीय योगदान के लिए सिटी पैलेस ट्रस्ट द्वारा सवाई राम सिंह अवॉर्ड प्रदान किया गया है। वर्ष 1990 में पेरिस (फ्रांस) में आयोजित सोलो फोटोग्राफी एग्जीबिशन का उद्घाटन राजमाता गायत्री देवी जी ने किया।

सुधीर कासलीवाल वर्ष 1982-83 में चंडीगढ़ में आयोजित फोटोग्राफी एग्जीबिशन से लेकर वर्तमान समय तक अपनी कला को देश के विभिन्न शहरों से लेकर विदेश (मैक्सिको सिटी, पेरिस, जापान, इटली,भूटान आदि) में प्रदर्शित करते आ रहे हैं और इस यात्रा में कई स्तरीय पुरस्कार भी इन्हें प्राप्त हो चुके हैं। इसके साथ-साथ पिताजी के नाम पर बने एल.के.कासलीवाल ट्रस्ट के जरिए विभिन्न प्रकार के समाज सेवा से जड़े कार्यों में भी तन-मन-धन से योगदान देने में प्रयासरत रहते हैं।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/450/2018-20
समाचार पत्र की पंजीयन संख्या : RAJHIN/2018/75539

प्रकाशन की तिथिः माह की 1 तारीख
प्रेषण दिनांक : हर माह की 5 तारीख, सी.एस.ओ. गांधीनगर, जयपुर

शहीद कै. अमित भारद्वाज के माता-पिता व बहन को सेना विशेषांक की प्रति भेंट करते हुए।

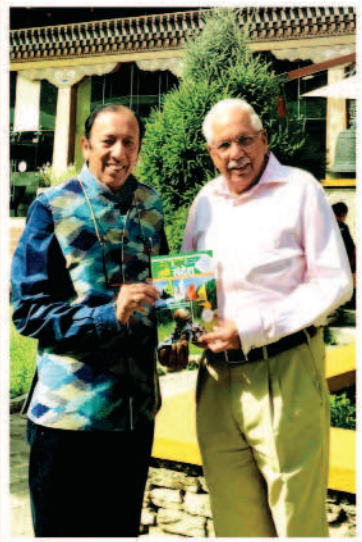

माही संदेश के संरक्षक-सलाहकार सुधीर माथुर भूटान में लेफ्टिनेंट जनरल गोविंदर पुरी (सेवानिवृत्त) को सेना विशेषांक भेंट करते हुए।

सेना विशेषांक का लोकार्पण

सेना विशेषांक का लोकार्पण दक्षिणी पश्चिमी कमान प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल चेरिश मैथसन ने सप्त शक्ति कमान मुख्यालय में किया। तस्वीर में- माही संदेश के संरक्षक-सलाहकार सुधीर माथुर, प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन, सह-संपादक ममता पंडित, नित्या शुक्ला, माला रोहित कृष्ण नंदन, दीपक कृष्ण नंदन, नवीन कानूनगो, राजपाल सिंह, चित्रकार चन्द्रप्रकाश गुप्ता, कांति ऑफ सेट प्रिंटर्स के ऑनर अशोक जैन, विजयलक्ष्मी जांगिड, रमाकांत खंडेलवाल, मोहन चौहान, लेफ्टिनेंट जनरल समत सिंह के पुत्र कर्नल रणविजय सिंह व पौत्री मेघना उपस्थित रहे।

लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला को सेना विशेषांक की प्रति भेंट करते हुए।

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें
प्रेषक :
संपादक (माही संदेश)
50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर
के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-
302021 (राजस्थान)। मो. 9887409303

सेवा में,

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक **रोहित कृष्ण नन्दन** द्वारा कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स, 448, बाक्लीवाल भवन, लाल जी सांड का रास्ता, जयपुर से छपवाकर माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर, अजमेर रोड, जयपुर-302021 से प्रकाशित किया। **मो.** 9887409303